विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध- एक अध्ययन

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की मास्टर ऑफ एजुकेशन (आर.आई.ई.)

उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध प्रबंध

2013-14

Q-410

शोध मार्गदर्शक
प्रो. रमेश बाबू
क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान,भोपाल

शोधार्थी
अल्पना बामने(आर.आई.ई.)
एम.एड. क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान,भोपाल

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल
Regional Institute of Education Bhopal
पुस्तकालय
Library

क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान, भोपाल
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
(एन.सी.ई.आर.टी.)श्यामला हिल्स भोपाल (म.प्र.)

घोषणा – पत्र

मै कु. **अल्पना बामने** एम.एड. की छात्र हूँ। जो कि " **विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध"–एक अध्ययन,** विषय पर लघुशोध प्रबंध 2013–2014 मे **प्रो. रमेश बाबू,** क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान भोपाल के मार्गदर्शन मे किया गया है।

यह लघुशोध प्रबंध मेरे द्वारा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. (आर.आई.ई.) की परिक्षा 2013–2014 की उपाधी की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस शोध के लिए दिऐ गये आंकडे एवं सूचनायें विश्वसनीय स्त्रोतो तथा मूल स्थानो से प्राप्त किये गये है तथा ये प्रयास पूर्णतः मौलिक एवं सत्य है।

Alpana Bamne

स्थान : भोपाल

दिनांक : 19.05.2014

शोधार्थी

अल्पना बामने

(एम.एड. छात्रा)

क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान–भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली)

श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कु. अल्पना बामने क्षेत्रिय शिक्षा संस्था शिक्षा विभाग भोपाल मे एम.एड. कि नियमित छात्रा है। इन्होने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से शिक्षा में स्नाकोत्तर उपाधी हेतु प्रस्तुत शोध प्रंबध विषय **"विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध"–एक अध्ययन,** मेरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। यह शोध कार्य इनकी निष्ठा एवं लगन से किया गया मौलिक प्रयास है जो पुर्व मे इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नही किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की एम.एड. परीक्षा सन् 2013–14 की आशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत है।

दिनांक : 19.5.2014

क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान–भोपाल

शोध मार्गदर्शक

प्रो. रमेश बाबू

क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान–भोपाल

आभार – ज्ञापन

प्रस्तुत लघु शोध '' **विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध''–एक अध्ययन,** की संपूर्णता का श्रेय मेरे मार्गदर्शक प्रो. रमेश बाबू क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान भोपाल को जाता है। जिनके निर्देशन,मार्गदर्शन,प्रोत्साहन, परामर्श एवं समयबंध्ता ने इस शोध कार्य को पूरा करने हेतु सहयोग प्रदान किया । प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध आपके द्वारा शोध कार्य मे धैर्यपूर्वक प्रदान आत्मीय व्यवहार एवं विश्वास, सहयोग का प्रतिफल है। जिन्होने मुझे स्वयं के बहुमुल्य समय मे से एक अध्यापक , अभिभावक तथा निर्देशक के रूप मे पर्याप्त समय दिया है। अतएव मैं उनकी ऋणी हूँ।

मैं आदरणीय प्राचार्य एच.के सेनापति, डॉ. किरण माथुर, डॉ. के.के. खरे, डॉ. रत्नमाला आर्य, डॉ. आनन्द वाल्मीकी, संजय पंडागरे, डॉ.एन.सी. ओझा,एवं समस्त मित्रों,परिवारजनो की हृदय से आभारी हूँ जिन्होने समय –समय पर उचित मार्गदर्शन व प्रोत्साहन के द्वारा मेरे शोध कार्य में सहयोग दिया।

मैं पुस्तकालयाध्यक्ष एवं आई.सी.टी.,ई.टी. संचालक व समस्त कक्षा सहयोगियों का हदय से आभार प्रकट करती हूँ।

Alpana Bamne

स्थान –भोपाल

दिनांक : 19.05.2014

शोधार्थी

अल्पना बामने

(एम.एड. छात्रा)

क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान–भोपाल

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	अध्याय प्रथम – शोध का परिचय 1.1 प्रस्तावना 1.2 शोध की आवश्यकता 1.3 शोध का औचित्य 1.4 समस्या कथन 1.5 शोध के उद्देश्य 1.6 शोध की परिकल्पना 1.7 शोध मे प्रयुक्त चरों की परिभाषा 1.8 शोध की सीमाएं	1–10
2	अध्याय द्वितीय :–संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन 2.1 प्रस्तावना 2.2 शोध से संबंधित कार्य	11–13
3	अध्याय तृतीय :– शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया 3.1 प्रस्तावना 3.2 शोध पद्धती 3.3 न्याद्रर्श का चयन विधि 3.4 न्यादर्श का विवरण 3.5 शोध में प्रयुक्त चर 3.6 शोध में प्रयुक्त उपकरण 3.7 शोध उपकरणों का प्रशासन	14–19
4	अध्याय चतुर्थ :– आकड़ो का विश्लेषण संख्यिकी एवं परिणाम 4.1 प्रस्तावना 4.2 आकड़ो का विश्लेषण एवं संख्यिकी प्रयोग 4.3 शोध का परिणाम एवं निष्कर्ष	20–72
5	अध्याय पंचम :– शोध संराश निष्कर्ष एवं सुझाव 5.1 प्रस्तावना 5.2 समस्या कथन 5.3 शोध के उद्देश्य 5.4 शोध के चर 5.5 शोध के न्यादर्श एवं शोध पद्धती 5.6 शोध में प्रयुक्त उपकरण 5.7 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि 5.8 शोध की सीमाएं 5.9 शोध निष्कर्ष 5.10 भावी शोध हेतु सुझाव	73–78

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्य प्रदेश
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

अध्याय प्रथम– शोध का परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 शोध की आवश्यकता

1.3 शोध का औचित्य

1.4 समस्या कथन

1.5 शोध के उद्देश्य

1.6 शोध की परिकल्पना

1.7 शोध मे प्रयुक्त चरों की परिभाषा

1.8 शोध की सीमाएं

अध्याय प्रथम– शोध का परिचय

शोध कथन

"विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध"– एक अध्ययन

1.1 प्रस्तावना :–

समायोजन व्यक्ति के द्वारा कि जाने वाली वह सचेतन क्रिया है, जिसमें वह अपनी आवश्यकताओं कि पूर्ति एवं परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करता है। तभी वह अपना कार्य व्यवहार उचित ढ़ंग से करने में समर्थ होता है। समायोजन के द्वारा हम अपने आप को बदलती परिस्थितियों के अनुसार बदलने का प्रयत्न करते हैं, तो दूसरी ओर समायोजन हमें ऐसे शक्ति और सार्थकता भी देता है कि हम परिस्थितियों को ही बदल सकें। समायोजन हमें हमारे और हमारी परिस्थितियों के बीच बनाना होता है। अतः उसके लिए अपने आप को बदल कर संतुलन बनाया जा सकता है। अर्थात् हालातों से समझौता किया जा सकता है। व्यक्ति कि एक दशा, मनोदशा को ही प्रकट करती है।इस मनोदशा पर अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव उसकी अपनी संतुष्टी का ही पड़ता है और वह कितना संतुष्ट है, इसकी कुंजी उसकी इच्छा और आवश्यकताओं की संतुलित तथा इस संतुष्टी से जुडी उसकी उम्मीदो पर आधारित होती है। एक बालक तभी संतुष्ट होता है, जब वह अपने आप को समायोजित अनुभव करता है।

1.2 सामाजिक समायोजन–

व्यक्ति को अपने आप से संतुष्ट तथा समायोजित होने कि आवश्यकता होती है, उतना ही अपने सामाजिक परिवेश से जुडी बातों तथा व्यक्ति के साथ उचित ताल–मेल बनाये रखकर समायोजित रहने की होती है। उसे अपने परिवेश में तथा उसमें उपलब्ध परिस्थितियों में भी संतुष्ट अनुभव करना चाहिए। तभी वह ठीक तरह से समायोजित रह सकता है। सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर परिवार से शुरु होकर विद्यालय को छूता है। एक बालक पूर्णतः

सामाजिक समायोजन तब प्राप्त करता है, जब वह घर, परिवार, मित्र, संबंधी, पड़ोस, समुदाय एवं विद्यालय में समायोजित हो तो वह बालक पूर्णतः सामाजिक समायोजित हो सकता है। घर परिवार से लेकर मित्र सगे संबंधियों-पड़ोसियों, समुदाय, समाज एवं विद्यालय में रहने वाले सहपाठियों तथा सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश से समायोजित होने के लिए व्यक्ति को किस प्रकार प्रयत्न करने चाहिए। इस दिशा में पहली बात तो यह है कि उसे समाजिकता का पाठ सही ढ़ंग से पढ़ना चाहिए तथा उसे सच्चाई से व्यवहार में लाना चाहिए। उसमें सभी सामाजिक गुणों का समावेश होना चाहिए तथा अधिकार के स्थान पर कर्तव्यों के पालन कि अधिक इच्छा होनी चाहिए। समाज के नियम, उसकी आचार संहिता, समाज तथा विशेषकर अपने समुदाय कि विशेष अभिवृत्तियों, संस्कारों तथा रीति-रिवाजों से परिचित होना चाहिए तथा उनका एक उचित सीमा तक पर्याप्त सम्मान करना चाहिए। ऐसी अवस्था में ही उसे अपने सामाजिक परिवेश में ठीक प्रकार समायोजित होने में उचित सहायता मिल सकती है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, वह अपनी आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। व्यक्ति कि उपलब्धि के रुप में समायोजन का तात्पर्य यह है कि एक व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में कितनी दक्षता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करता है। जब हम समायोजन को एक उपलिब्ध मानते हैं तो हम समायोजन की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए कुछ मापदण्ड निर्धारित करते हैं। प्रक्रिया के रुप में समायोजन अध्यापकों के लिए महत्वपूर्ण होता है। विद्यार्थियों का समायोजन व्यापक रुप से जिस वातावरण में वह रहते हैं, उससे प्रभावित होता है। वह सदैव इसके अनुकूल समायोजन का प्रयत्न करते है।एक व्यक्ति जो अपने मूल्यों तथा आचरणों के मानकों को बिना किसी परिवर्तन के धारण करता है तथा समाज में पर्याप्त परिवर्तन होने पर भी उन्हें जारी रखता है, उन्हें समावेशक कहते हैं। वह व्यक्ति जो अपने मानको को सामाजिक संदर्भो से ग्रहण करता है और अपने विश्वासों को समाज के परिवर्तन मूल्यों के साथ बदलता रहता है, उसे समंजक कहते हैं। समाज में सफलतापूर्वक समायोजित होने के लिए एक व्यक्ति को दोनों युक्तियों-समावेषण समंजन का सहारा लेना होता है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब सामाजिक मनोविज्ञान कि आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती है। जिसके फलस्वरुप उसका कुसमायोजित व्यवहार होता है। जब इन आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है, तो जीव में संतुलन की एक अस्थायी स्थिति हो जाती है और लक्ष्य की ओर क्रियाशीलता समाप्त हो

जाती है। इस प्रकार समायोजन एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी जैविक मनोवैज्ञानिक तथा समाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उचित व्यवहार अनुक्रियाओं द्वारा बाह्य अपेक्षा तथा स्वयं कि आंतरिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है। विद्यालय में समायोजन शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है कि विद्यार्थियों के उनके सामाजिक जीवन में सफल होने का प्रशिक्षण देना। जीवन के स्वभाविक उद्देश्यों के अनुसार छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण एवं परिस्कार करने में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

1.3 सामाजिक समायोजन के क्षेत्र–

अ– व्यक्तिगत समायोजन

1 शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन

2 मानसिक विकास और स्वास्थ्य समायोजन

3 संवेगात्मक समायोजन

4 लैंगिक समायोजन

5 व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित समायोजन

ब– सामाजिक समायोजन

1 घर परिवार से समायोजन

2 मित्र और संबंधियों से समायोजन

3 पड़ोसियों तथा समुदाय के अन्य सदस्यों से समायोजन

स- व्यवसायिक समायोजन

1 कार्य स्थान में समायोजन

2 कार्य वातावरण में समायोजन

1.4 सु-समायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ

1. चिंतन में परिपक्वता।
2. भावात्मक संतुलन
3. दूसरो के प्रति संवेदन समझ।
4. दैनिक घटनाओं के द्वारा जनित तनाव से मुक्ति ।
5. स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम।
6. स्पष्ट उद्देश्य ।
7. समाजिकता की भावना।
8. उत्तरदायित्व की भावना।
9. औरो को कष्ट नहीं पहुचाना।

1.5 शोध का महत्व एवं आवश्यकता-

शोधार्थीको जानने कि यह जिज्ञासा है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में बालको के सामाजिक समायोजन से उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करती है। विद्यार्थी विद्यालय में पाठ्यक्रम एवं विद्यालय गतिविधियों सहपाठियों के साथ किस प्रकार समायोजित होते है। जिससे कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है या कम होती है। अनेक बालक विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते, इससे उन विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह जानने का प्रयास इस शोध अध्ययन में किया गया है।

1.6 शोध का औचित्य–

प्रस्तुत पूर्व में किये गये शोधों में सामाजिक समायोजन से संबंधित शोध कम मात्रा में प्राप्त होने के कारण शोधार्थीको सामाजिक समायोजन से संबंधित शोध करने कि जिज्ञासा है। शोधार्थीको आशा है कि इस शोध द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुऐ,उससे विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्रभाव को देखा जा सकेगा। यह जानकर हमें आने वाले समय में सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को जानने में मदद मिलेगी।इस शोध सर्वेक्षण के बाद प्रशासन को यह जानकारी प्राप्त होगी कि विद्यालय में किस प्रकार कि क्रियाऍ होने से विधार्थियों में सामाजिक समायोजन अधिक होकर शैक्षिक उपलब्धि को अधिक प्राप्त किया जा सकता है।शिक्षकों को बालको के व्यवहार एवं सामाजिक समायोजन द्वारा किस प्रकार कि शिक्षा दे सकते है। यह जानकारी प्राप्त हो सकती है।इस शोध द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु काम आने वाली जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है।

1.7 प्रस्तुत शोध का प्रारम्भ निम्नलिखित कथन से होता है:–

"विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध"– एक अध्ययन

1.8 शोध के उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य बनाये गये हैं, जिससे शोध में प्रयुक्त चरों को प्रत्येक की औसत ज्ञात करके देखाजिससे सभी चरों के मध्य संबंध एवं अंतर को ज्ञात किया जा सका है। इससे विशेष जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिली है:–

1 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

2 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लिंग अनुसार ज्ञात करना।

3 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

4 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

5 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

6 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन ज्ञात करना।

7 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन लिंग अनुसार ज्ञात करना।

8 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

9 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

10 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

11 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

1.9 शोध की परिकल्पना

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है क्योंकि शोध में प्रयुक्त चर सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में कोई सही दिशा प्राप्त न होने के कारण शोधार्थी ने अपने अनुभव एवं ज्ञान के अनुसार शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है जो निम्नलिखित है:-

अ- शोध की परिकल्पनाएँ

1अ छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

2अ छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

3अ शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

4अ अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

5अ सी.बी.एस.ई. विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

6अ म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

7अ हिन्दी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

8अ अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

9अ विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

ब- शोध की उप.परिकल्पनाएँ

1.ब- छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2.ब- छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

3.ब- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4.ब- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

5.ब- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

6.ब- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

7.ब- हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

8.ब- हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

स- परिकल्पना के प्रकार

(1) **सकारात्मक परिकल्पना**-जिसमें दो चरों के संबंध को सकारात्मक रूप में दर्शाता है।

(2) **नकारात्मक परिकल्पना**- जिसमें दो चरों के संबंध को नकारात्मक रूप में दर्शाता है।

(3) **शून्य परिकल्पना**-जिसमें समस्या में दो चरों के बीच के संबंध को अंतर रहित रूप में दर्शाया जाता है।

उदा.- उच्च आर्थिक परिवारों से आने वाले छात्रों और निम्न परिवारों से आने वाले छात्रों के परिश्रम करने की वृत्ति में कोई अंतर नहीं होता।

द- परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत शोध में परिकल्पना परीक्षण हेतु रूपरेखा के अनुसार प्रमुख चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध एवं अंतर को देखने के लिए r सार्थकता तालिका में .01 एवं .05 स्तर पर जाँचकर परिकल्पना की स्वीकृति एवं अस्वीकृति दी है। अंतर की परिकल्पना परीक्षण जाँचने के लिए सारणी t के मान .01 एवं .05 स्तर पर देखकर परिकल्पना का परीक्षण किया है।

1.10 चरों कि परिभाषाएँ

अ सामाजिक समायोजन

1 **वोनहेलर :-** हम समायोजन शब्द को अपने आप को मनोवैज्ञानिक रुप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते हैं जैसे कि जीवशास्त्री अनुकुल (ADAPTION) शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक एवं भौतिक रुप से जीवित रखने के लिए करते है।

2 **गेट्स जरिशिल और अन्य :-** समायोजन एक ऐसी सत्त प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।

ब शैक्षिक उपलब्धि

1 **सुपर :-** एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग करता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा कोई कार्य कितनी भलिभॉति कर लेता है।

2 **ईबेल :-** शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्पना है, जो विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।

स सक्रियात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोधानुसार कुछ परिभाषाओं का निर्माण किया है, जो इस प्रकार है।

1 **शैक्षिक उपलब्धिः-**''शैक्षिक उपलब्धि से आशय है कि छात्रों को जो कुछ पढ़ाया व सिखाया गया है, उसमें से उन्होंने कितना सीखा है। यह ज्ञात करना शैक्षिक उपलब्धि है''।

2 **सामाजिक समायोजनः-**''विद्यार्थीयों का विद्यालय में एक दूसरे के साथ समायोजन एवं हर प्रकार से मिलकर रहना एवं अपनी बात को सभी विद्यार्थीयों के साथ व्यक्त करना'' जिससे उनको अकेलेपन की अनुभूति न हो यह इस शोध के अनुसार सामाजिक समायोजन है।

1.11 शोध की सीमाएँ

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेकों सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं परन्तु इस शोध हेतु सामाजिक समायोजन के साथ शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए लिया गया है। अन्य कारक जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते है। उन्हें हमने इस शोध में शामिल नहीं किया। इसलिए इस शोध की मुख्य सीमाओं का निर्धारण केवल निम्न आधार पर किया गया है।

प्रस्तुत शोध की सीमाओं का निर्धारण किया गया है, जो निम्नलिखित हैः-

1. प्रस्तुतशोध मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के क्षेत्र में निहित है।
2. प्रस्तुत शोध कक्षा 11 वीं के **गणित संकाय** के विद्यार्थियों पर किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों कि आयु 16 से 18 वर्ष के बीच है।
4. प्रस्तुत शोध में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों का चयन किया गया है।
6. प्रस्तुत शोध मेंहिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों का चयन किया गया है।
7. प्रस्तुत शोध में सी.बी.एस.ई. विद्यालयएवं म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों को चयन किया गया है।
8. प्रस्तुत शोध कक्षा 11 वीं के **गणित संकाय** के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन को लिया गया है।

अध्याय द्वितीय :–संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

1. प्रस्तावना
2. शोध से संबंधित कार्य

अध्याय द्वितीय :–संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावनाः–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पद है। किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नीव के सामान होता है। जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है। समास्या से संबंधित कार्य का पुनरावलोकन अनुसांधान आधार तथा गुणात्मक स्तर के लिए के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान है। इसमें साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य तथा प्रारम्भिक चरण है। क्षेत्रिय अध्ययनों में जहॉ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा आकड़ो का संकलन कार्य होता है। यह हमें पुराने शोधो के बारे में जानकारी देते है। साथ ही उनकी कमियों एवं विशेषताओं को जानकर संबंधित शोध के बारे मे हमें सहायता प्रदान करते है। इसलिए संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे नये शोधों में विशेष भूमिका निभाते है।

2.2 संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन–

1. **अग्रवाल कुसुम** (1999) ने ''असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न या उनके अनुसार अभिभावको का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि'' पर शोध किया है।

निष्कर्षः–शोधों में उन्होने पाया कि असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न या उनके अनुसार अभिभावको का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रुप से प्रभावित करता है।

2.**अग्रवाल रेखा** (1998) ने ''माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पद्धति प्रर्दशन बालको के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि'' पर शोध किया है।

निष्कर्ष –शोधों में उन्होने पाया कि माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पद्धति प्रर्दशन बालको के अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता है।

3.गर्ग चित्रा (1992) ने ''पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन'' पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोधों में उन्होने पाया कि पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया है।

4.गरीगोटोय एस.एम. (1984) ने 'माता–पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालको के समायोजन पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोधों में उन्होने पाया कि माता–पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालको के समायोजन पर पड़ता है।

5.भदोरिया विवेक (2012) ने ''किशोर छात्र–छात्राओं के स्व प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलिब्ध एवं समायोजन'' पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोध में पाया कि किशोर छात्र–छात्राओं के स्व प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलिब्ध एवं समायोजन में सार्थक संबंध है।

6.कुमार महेश मुझाल एवं कुमार सुभाष (2008) ने ''उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलिब्ध''पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोध में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलिब्ध का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

7.कुमार सुभाष (2003) ने ''माता–पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि'' पर शोध किया है।

निष्कर्ष –शोधों में पाया कि माता–पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

8.पवार एवं उनिपाल (2008) ने ''विद्यार्थियों के लिगं अनुसार उनके परिवारिक, समाजिक स्वस्थ्य, एवंसंवेगात्मक समायोजन का अध्ययन'' पर शोध किया है।

निष्कर्ष- शोधों में पाया कि बालक बालिकओं के पारिवारिक सामाजिक, स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायाजोन के मध्य कोई सार्थक अंतर नही है। जबकि विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर है।

9.सक्सेना वन्दना (1988) ने विभिन्न प्रकार के परिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक-उपलब्धि पर शोध किया है।

निष्कर्ष-शोधों में उन्होने पाया कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक-उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

10. **विद्या प्रतिभा** (2006) ने ''विद्यार्थियों में तनाव का कारण विद्यालय का समायोजन एवं उसका प्रभाव पर शोध किया है।

निष्कर्ष- शोधों में पाया कि विद्यार्थियों में तनाव का 40 प्रतिशत कारण विद्यालय में समायोजन न होना।

अध्याय तृतीय :–शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

1. प्रस्तावना
2. शोध पद्धती
3. न्यादर्श की चयन विधि
4. न्यादर्श का विवरण
5. शोध में प्रयुक्त चर
6. शोध में प्रयुक्त उपकरण
7. शोध उपकरणों का प्रशासन
8 आकड़ो का संकलन
9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्याय तृतीय :–शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावनाः–

अनुसांधन कार्य सही दिशा में अग्रसर होने के लिए यह जनना आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूप रेखा तैयार की जाए क्योकि यह रूप रेखा ही शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। न्यादर्श जितने अधिक विश्वासानीय होगे शोध के परिणाम उतने ही वैद्य एवं परिशुद्ध होगे न्यादर्श चयन के पश्चात उपकरण एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण होता है। क्योकि इसी आधार पर आकड़ो का संकलन किया जाता है।

3.2 शोध पद्धति :–

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी एवं सामाजिक समायोजन के संबंध को जानने के लिये विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का चयन किया है । इस शोध हेतु अनेक विभिन्नता होने के कारण विवरणात्मक पद्धति को चुना गया है शोध पद्धति में सर्वे अध्ययन सबसे उपयुक्त विधि है ।

शोध करने हेतु शैक्षिक अनुसंधान में तीन प्रकार की शोध पद्धति का प्रयोग किया जाता है :

1 ऐतिहासिक पद्धति

2 विवरणात्मक पद्धति

3 प्रयोगात्मक पद्धति

यह शोध **विवरणात्मक पद्धति** द्वारा किया गया शोध है। इसमें **सर्वे अध्ययन** का उपयोगकिया गया है।इसमे विद्यार्थियों की **शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंधो** का अध्ययन किया गया है।

3.3 न्यादर्श :-

प्रस्तुत शोध में बैतूल जिले के आमला, मुलताई एवं बैतूल शहरों को लिया गया है। न्यादर्श को **स्तरीकृत** यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। इस शोध कार्य के लिए कुल 10 विद्यालयों 7 माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल(म. प्र.) एवं 3 विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल दिल्ली के विद्यालयों **स्तरीकृत यादृच्छिक विधि** द्वारा चुना गया है। इस शोध हेतु प्रत्येक विद्यालय के 20 विद्यार्थियों का चयन **लाटरी विधि** द्वारा किया गया हैं। इसमें कुल 200 विद्यार्थी है। इसमें 126 **बालक एवं 74 बालिकाएँ** शोध के लिए चयन किया गया है।

शोध के कुल 200 न्यादर्श का विवरण

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

तालिका कमांक –1

बैतूल जिले के विद्यार्थीयों का विवरण

कं.	विद्यालय का नाम	विद्यालय का प्रशासन	विद्यार्थियों की सं.	शिक्षा का माध्यम	विद्यालय का प्रकार	विद्या.का स्थान
1	शा.कन्या विद्यालय	शासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
2	शा. बालक विद्यालय	शासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
3	शा.उत्कृष्ट विद्यालय	शासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	बैतूल
4	गुरुनानक हायर सेकण्री स्कूल	अशासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
5	शा.उत्कृष्ट विद्यालय	शासकीय	20	अंग्रेजी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	बैतूल
6	भारतभारतीय बालक आवसीय विद्यालय	अशासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	बैतूल
7	आर.डी.पब्लिक स्कूल	अशासकीय	20	अंग्रेजी	के.मा.शि.मं. दिल्ली	बैतूल
8	केन्द्रीय विद्यालय	शासकीय	20	अंग्रेजी	के.मा.शि.मं. दिल्ली	आमला
9	लाईफ कैरियर स्कूल	अशासकीय	20	अंग्रेजी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
1.0	जवाहर नवोदय विद्यालय	शासकीय	20	अंग्रेजी	के.मा.शि.मं. दिल्ली	मुलताई

3.4 शोध में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध हेतु मुख्यतः **दो चरों सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि** को चुना है क्योंकि यह शोध अनेकों चरों से मिलकर बना है परन्तु विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी बढ़ाने के लिये क्या सामाजिक समायोजन आवश्यक होता है या नहीं यह जानना इस शोध का मुख्य उददेश्य है

अ **शोध में मुख्य रूप से तीन प्रकार के चर होते हैं**

1 स्वतंत्र चर

2 आश्रित चर

3 संगत चर

इस शोध में कोई भी चर को स्वतंत्र या आश्रित चर के रूप में नहीं दिखाया गया है क्योंकि **विवरणात्मक पद्धति** में कोई भी चर स्वतंत्र या आश्रित नहीं माना जाता ।

प्रस्तुत शोध हेतु मुख्यतः दो चरों शैक्षिक उपलब्धी एवं सामाजिक समायोजन को चुना है

ब शोध के मुख्य रूप

1 **शैक्षिक उपलब्धि**

2 **सामाजिक समायोजन**

स शोध के अन्य चर

1	छात्र	2	छात्राएँ
3	शासकीय	3	अशासकीय
4	सी.बी.एस.ई.	5	म.प्र. बोर्ड
6	हिन्दी माध्यम	7	अंग्रेजी माध्यम

3.5 शोध उपकरण–

अ समाजिक समायोजन

1 **मानकीकृत उपकरण–** प्रस्तुत शोध मेंनिम्न शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है। इस शोध में विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को ज्ञात करने के लिए **मनोवैज्ञानिक दैवा** द्वारा निर्मित **सामाजिक समायोजन इन्वेन्ट्री टूल** का उपयोग करके वास्तविक समाजिक समायोजन की जानकारी प्राप्त कि है

ब शैक्षिक उपलब्धि

1 **संचयी अभिलेख–** प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु छात्रों से संबंधित सूचनाओं को कमबद्ध रूप में एकत्रित किया है। इसमें छात्रों की उपस्थिति, शैक्षिक प्रगति, योग्यता प्रयोगात्मक कार्य, पाठ्य सहगामी कियाओं में सहभागिता, उनकी रुचियाँ, व्यक्तित्व आदि सूचनाओं का विस्तृत आलेख होता है। परन्तु इस शोध में विद्यार्थियों के गणित विषय के अंकों को ही लिया गया है

शोध हेतु विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि जानने के लिए **अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल** को विद्यालय से प्राप्त किया गया है प्रस्तुत शोध कक्षा 11 वीं के **गणित संकाय** के विद्यार्थियों पर किया गया है।

3.6 शोध उपकरणों का प्रशासन

इन उपकरणों के समस्त प्रशासन के लिए 14 दिन की अवधि दी गई थी। प्रारम्भ करने के पूर्व न्यादर्श में चयनित विद्यालय के प्रधानध्यापक से परीक्षणों को विद्यार्थियों पर प्रशासनिक करने की अनुमति के लिए आवेदन किया गयाउसमें स्वीकृति मिलने पर प्रत्येक विद्यालय के लिए निश्चित तिथि एवं समय का कार्यकम बनाकर कार्य शूरू किया गया परीक्षण के प्रशासन के लिए कक्षा 11 वी गणित, संकाय केप्रत्येक विद्यालय से 20 विद्यार्थियों को चुना गया । विद्यार्थियों को कक्षा में एक साथ बेठाने के बाद सभी विद्यार्थियों को एक सादे कागज पर उनका स्वयं का नाम लिखने के लिये कहा गया उसके बाद विद्यार्थियों से वह कागज वापस लेने के बाद सभी कागज को मोड़कर चिट बना ली गयी उसके बाद उन

सभी चिटों को एकत्र करके वॉक्स में रखा गया उसके पश्चात एक विद्यार्थी से एक-एक करके 20 चिटें निकालने के लिये कहा गया सभी चुने गये बीस विद्यार्थियों को कक्षा में एक तरफ बिठा कर सामाजिक समायोजन मापनी प्रदान की गयी । विद्यार्थियों को निर्देश दिया गया कि इस प्रश्नावली में कुल 100 प्रश्न हैं जिसका उत्तर आपको हाँ या नही में देना है । सभी प्रश्नों को करना आवश्यक है । इस प्रश्नावली को 45 मिनट के अंदर पूरा करना आवश्यक है । इस प्रश्नावली पर विद्यार्थी केवल अपना नाम एवं लिंग लिखना है । विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी के लिये शोधार्थी ने कक्षाध्यापक से विद्यार्थियों का अर्धवार्षिक परिक्षा परिणाम प्राप्त कर सामाजिक समायोजन मापनी के साथ लगा दिया है ।

3.7 आकड़ो का संकलन

आकड़ो का संकलन एकत्रीकरण, संगठित, विश्लेषण, एवं व्याख्या करने हेतु सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता है। मापन एवं मूल्यांकन के लिए संख्यिकी को मुख्य साधन माना जाता है।

3.8 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

1 प्रस्तुत शोध हेतु सहसंबंध कार्ल पिर्यसन गुणांक विधि का प्रयोग किया है। **संबंध दो चरों के मध्य अन्तर देखने हेतु टी. टेस्ट, (क्रातिंक अनुपात), मध्यमान की मानक विचलन त्रुटी,सहसंबंध की सार्थकता** ज्ञात करने हेतु उपयुक्त सूत्रों का उपयोग किया है।

2 प्रस्तुत तालिका में दो चरों का औसत मान प्राप्त हुआ है। दो चरों का मानक विचलन प्राप्त हुआ है। इन विचलनों के बाद औसत मान अंतर ज्ञात किया गया। उसके बाद मानक विचलन एवं मध्यमान के अंतर की सहायता से (मानक विचलन त्रुटि) ज्ञात की गई।

3 **टी परीक्षण हेतु** (मानक विचलन त्रुटि) से मध्यमान के अंतर को विभाजित कर दिया जाता है जिससे टी परीक्षण ज्ञात किया गया है।टी परीक्षण की सार्थकता को ज्ञात करने हेतु टी टेबल के अनुसार .01 एवं .05 पर देखकर ज्ञात किया है।

अध्याय चतुर्थ :–आकड़ो का विवरण विश्लेषण एवं सांख्यिकी का प्रयोग

1. प्रस्तावना
2. आकड़ो का विवरण एवं सांख्यिकी प्रयोग
3. शोध का परिणाम एवं
4 शोध निष्कर्ष

अध्याय चतुर्थ :–आकड़ो का विवरण विश्लेषण एवं सांख्यिकी का प्रयोग।

4.1 प्रस्तावना :–

संख्यात्मक आकड़ो का एकत्रीकरण, संगठित, विश्लेषण, एवं व्याख्या करने हेतु सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता है। मापन एवं मूल्यांकन के लिए संख्यिकी को मुख्य साधन माना जाता है। विभिन्न व्यक्तिगत निरीक्षण द्वारा समूह व्यवहार अथवा समूह गुण धर्मो का स्पष्टीकरण करके उनका समान्यीकरण संख्यिकी द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध हेतु सहसंबंध कार्ल पिर्यसन गुणांक विधि का प्रयोग किया है। **संबंध दो चरों के मध्य अन्तर देखने हेतु टी. टेस्ट, (क्रातिंक अनुपात) मध्यमान की मानक विचलन त्रुटी,सहसंबंध की सार्थकता** ज्ञात करने हेतु उपयुक्त सूत्रों का उपयोग किया है।

प्रस्तुत शोध के इस अध्याय चतुर्थ इसे मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया है।

1 **प्रथम भाग– न्यादर्श का विवरण**

2 **द्वितीय भाग–चरों के मध्य संबंध**

3 **भाग तीन–चरों के मध्य अंतर**

4.2 प्रथम भाग–न्यादर्श का विवरण

इस भाग में न्यादर्श का विद्यालय के प्रकार शासकीय– अशासकीय, लिंग अनुसार छात्र-छात्राएं , प्रशासन अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल दिल्ली– मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल एवं माध्यम अनुसार हिन्दी एवं अंग्रजी में वितरित किया गया है। इसमें न्यादर्श को तालिका अनुसार प्रदर्शित किया गया है।

4.3 द्वितीय भाग–चरों के मध्य संबंध

प्रस्तुत शोध में चरों के मध्य **सहसंबंध ज्ञात करना** शोध का मुख्य उद्देश्य है–

इस भाग में चरों के मध्य संबंध ज्ञात करने हेतु दो स्वतंत्र चरों सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध एक आश्रित चर छात्र, छात्रा, शासकीय, अशासकीय, हिन्दी, अंग्रेजी, सी.बी.एस.ई. और म.प्र. बोर्ड के माध्यम से प्राप्त किया गया है। इस भाग में दोनों मुख्य चरो का संबंध सार्थक है या नहीं यह देखा गया है। इसकी सार्थकता ज्ञात करने हेतु उद्देश्य अनुसार बनाई गईसामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि परिकल्पना की जाँच की गई है। सहसंबंध की सार्थकता तालिका अनुसार ज्ञात की गई ।

1 छात्र–छात्राएं

2 शासकीय–अशासकीय

3 सी.बी.एस.ई. –.म.प्र. बोर्ड

4 हिन्दी माध्यम– अंग्रेजी माध्यम

410

4.4 भाग तीन–चरों के मध्य अंतर

प्रस्तुत भाग तीन में शोध के चरों के मध्य अंतर का ज्ञात किया गया है।

इस भाग में दो आश्रित चरों के मध्य एक स्वतंत्र चर के माध्यम से सार्थक अंतर है या नहीं यह ज्ञात किया गया है।सभी चरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के अनुसार सार्थक अंतर की गणना की गई है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education
पुस्तकालय
Library

प्रस्तुत भाग में निम्न चरों में अंतर की सार्थकता प्राप्त की गई है।

1 छात्र– छात्राएं

2 शासकीय –अशासकीय

3 सी.बी.एस.ई. –. म.प्र. बोर्ड

4 हिन्दी माध्यम– अंग्रेजी माध्यम

4.5 सहसंबंध

सहसंबंध एक सांख्यिकी तकनीक है जिसका प्रयोग दो या अधिक चरों के व्यवहारों का विश्लेषण करेन के लिये किया जाता है व्यवहारिक जीवन मे हम पाते है कि विभिन्न घटनाओं के बीच कुछ न कुछ संबंध अवश्य होता है उदाहरण के लिये,लोगो की आय बढने के साथ उनका उपयोग व्यय भी बड गया है। बाजार में वस्तु की कीमते घटने पर मागं बढ जाती है। लोगों की आयु बढने के साथ–साथ उनका वजन भी बढने लगता है। इस प्रकार के दो या चरो के बीच पाये जाने वाले पारस्पारिक संबंधो की दिशा' एवं मात्रा को मापने के लिए ही सांख्यिकी में सहसंबंध तकनीक का प्रयोग किया जाता है। ये संबंध एक दिशा में ही हो सकता है।

4.6 सहसंबंध के प्रकार

सहसंबंध कि दिशा,अनुपात एवं चरो की संख्या के आधार पर सहसंबंध के प्रकार है।

1.धनात्मक सहसंबंध

2.ऋणात्मक सहसंबंध

3.शून्य सहसंबंध

अ सहसंबंध गुणांक

संख्यात्मक सहसंबंध

-धनात्मक सहसंबंध

-ऋणात्मक सहसंबंध

-शून्य सहसंबंध

गुणात्मक सहसंबंध

-रेखीय सहसंबंध

-वकात्मक सहसंबंध

ब सहसंबंध की व्याख्या

धनात्मक सहसंबंध गुणांक

. 00 से 20 नाम मात्र धनात्मक सहसंबंध

. 21 से 40 कम धनात्मक सहसंबंध

. 41 से 60 साधारण धनात्मक सहसंबंध

. 61 से 80 अधिक धनात्मक सहसंबंध

. 81 से 99 बहुत अधिक धनात्मक सहसंबंध

+ 1 पूर्ण सहसंबंध

स इसी प्रकार ऋणात्मक गुणांक की व्याख्या की जाएगी।

गुणांक ऋणात्मक सहसंबंध

: 00 से 20 नाम मात्र ऋणात्मक सहसंबंध

: 21 से 40 कम ऋणात्मक सहसंबंध

: 41 से 60 साधारण ऋणात्मक सहसंबंध

: 61 से 80 अधिक ऋणात्मक सहसंबंध

: 81 से 99 बहुत अधिक ऋणात्मक सहसंबंध

- 1 . पूर्ण ऋणात्मक सहसंबंध

4.7 सहसंबंध गुणांक को ज्ञात करने की विधियां

1. स्पियरमैन का कोटी अतंर सहसंबंध गुणांक

2. कार्ल पिर्यसन का सहसंबंध गुणांक

4.8 सहसंबंध की सार्थकता ज्ञात करने हेतु

1. r>6pe 2. S.error =" 6 *pe =0.6745*1-r^2/ $\sqrt{N}$

4.9 आकडों का विवरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने **लॉटरी विधि** द्वारा कक्षा 11 वी गणित, संकाय के प्रत्येक विद्यालय से 20 विद्यार्थियों को विद्यालयों से चयन किया है। जो कि निम्न प्रकार है।

तालिका कमांक –2

बैतूल जिले के विद्यार्थीयों का विवरण

क्र	विद्यालय का नाम	विद्यालय का प्रशासन	विद्यार्थियों की सं.	शिक्षा का माध्यम	विद्यालय का प्रकार	विद्या.का स्थान
1	शा.कन्या विद्यालय	शासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
2	शा. बालक विद्यालय	शासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
3	शा.उत्कृष्ट विद्यालय	शासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	बैतूल
4	गुरूनानक हायर सेकण्री स्कूल	अशासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
5	शा.उत्कृष्ट विद्यालय	शासकीय	20	अंग्रेजी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	बैतूल
6	भारत भारतीय बालक आवसीय विद्यालय	अशासकीय	20	हिन्दी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	बैतूल
7	आर.डी.पब्लिक स्कूल	अशासकीय	20	अंग्रेजी	के.मा.शि.मं. दिल्ली	बैतूल
8	केन्द्रीय विद्यालय	शासकीय	20	अंग्रेजी	के.मा.शि.मं. दिल्ली	आमला
9	लाईफ कैरियर स्कूल	अशासकीय	20	अंग्रेजी	मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.	आमला
10	जवाहर नवोदय विद्यालय	शासकीय	20	अंग्रेजी	के.मा.शि.मं. दिल्ली	मुलताई

SCHOOL NAME-GOVT. BOYS SCHOOL CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDII	EDUC AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	RAHUL PATWARI	M	H	51	12	31	43	86
2	AAKASH GADEKAR	M	H	47	20	31	24	75
3	AASHIS SONI	M	H	49	20	40	39	99
4	PRAVIN KHATERKAF	M	H	45	20	36	40	96
5	ARUN YADAV	M	H	37	14	27	26	67
6	DURGESH PATHADE	M	H	36	15	38	27	80
7	MATHURA PRASAD	M	H	38	3	9	14	26
8	DIPAK KUMAR	M	H	43	14	49	33	96
9	ROHIT KUMAR	M	H	53	7	17	31	55
10	MAHADEV SABRE	M	H	50	20	29	50	99
11	MANVENDRA	M	H	45	16	29	18	63
12	RAVI RAVAT	M	H	65	22	16	23	59
13	PAVAN HARODE	M	H	48	20	36	26	82
14	NIKHIL NAGLE	M	H	44	20	35	33	88
15	KAMAL KISHORE	M	H	49	20	42	31	93
16	TARUN SORYVANSI	M	H	80	12	21	14	47
17	NAND KUMAR	M	H	48	20	12	40	72
18	KAPIL PANDOLE	M	H	52	15	30	34	79
19	SNEHA BOKARE	M	H	55	27	34	38	99
20	DURGESH GHIGHOL	M	H	42	14	28	22	64

SCHOOL NAME-GOVT.GIRLS SCHOOL AM CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIL	EDUCA.AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	PURJANA KHAN	F	H	66	5	26	31	62
2	VIBHA TAIVADE	F	H	30	12	40	31	83
3	PALAK	F	H	64	6	38	25	69
4	RADIKHA	F	H	44	8	26	38	72
5	DIPIKA PAL	F	H	46	3	15	20	38
6	YOGITA	F	H	43	6	30	16	52
7	LALITA BACHLE	F	H	37	4	18	41	63
8	POONAM	F	H	30	8	41	33	82
9	DIPA BADRE	F	H	49	5	15	31	51
10	PRITI KHATERKAR	F	H	48	6	36	28	70
11	NIYARIKA IVNE	F	H	35	7	30	24	61
12	URMILA HARODE	F	H	32	4	16	24	44
13	SONAM PARIHAR	F	H	54	8	24	36	68
14	SONALI PATIL	F	H	46	5	25	48	78
15	MEGHA PANDE	F	H	41	13	17	11	41
16	AAKANSHA	F	H	34	8	23	38	69
17	BHAVNA	F	H	63	7	15	18	40
18	KAVITA	F	H	35	16	46	21	83
19	VARSHA	F	H	43	10	23	18	51
20	HOLIKA SHAHU	F	H	44	12	25	40	77

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

SCHOOL NAME-GOVT.execllence school be CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIU	EDUC. AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	SATISH SONI	M	E	55	14	28	22	64
2	YASH RAJ	M	E	52	12	21	14	47
3	RATIKSHA	F	E	72	16	29	18	63
4	YASHIKA	F	E	76	17	47	31	95
5	SHURTI PATHAK	F	E	62	14	49	33	96
6	SHIYA	F	E	64	13	9	14	36
7	JAY BARNGE	M	E	67	15	38	27	80
8	AAYUSHI	F	E	68	20	36	26	82
9	VIYAKANT	M	E	81	14	27	26	67
10	VAISHALI	F	E	54	15	30	34	79
11	ADITI	F	E	66	31	12	40	83
12	HIMANU	M	E	57	14	49	33	96
13	PALAK	F	E	89	15	27	31	73
14	AAKASH	M	E	60	12	14	21	47
15	DIVYANSU	M	E	43	12	31	43	86
16	HARSE	M	E	53	20	36	35	91
17	SAKET PANDEY	M	E	88	14	49	33	96
18	AABHA	F	E	64	23	31	21	75
19	ADITYA	M	E	53	13	19	14	46
20	SITESH	M	E	55	14	25	19	58

SCHOOL NAME-Gurunanak school amla CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIU	EDUC. AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	ANIL MEENA	M	H	61	16	18	8	42
2	DEEPA MARSKOLE	F	H	51	13	9	11	33
3	MANALI VARMA	F	H	54	11	16	17	44
4	NAVIN PARIHAR	M	H	69	14	11	34	59
5	NITU KUMARE	F	H	65	11	18	5	34
6	NITESH MOHANE	M	H	49	14	18	24	56
7	POONAM PARTE	F	H	52	12	14	62	88
8	PRADIP KHADE	F	H	61	9	31	53	93
9	PRAGTI SOLANKI	F	H	51	14	30	11	55
10	ROHIT SHAHU	M	H	59	10	26	31	67
11	SHIVAM SHAHU	M	H	69	18	34	7	59
12	SHUBAM MANDVE	M	H	56	14	16	32	62
13	SHUSIL PANDOLE	M	H	55	13	31	44	88
14	VIRENDRA SOLANKI	M	H	52	18	14	12	44
15	VISHAL DESHMUK	M	H	53	17	31	31	79
16	YASH THAKUR	M	H	54	18	23	30	71
17	ANMOLE BAGGA	M	H	68	16	22	27	65
18	PRIYANSU	M	H	68	14	36	36	86
19	PRAGYA	F	H	87	14	16	33	63
20	PARTH MALVIY	M	H	61	6	11	9	26

SCHOOL NAME-Govt excellence school CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDII	EDUC.AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	HARSH KUMAR	M	H	60	12	20	17	71
2	GULSHAN DHAKAD	M	H	59	19	36	16	55
3	KARUN GAVANDE	M	H	61	11	19	5	67
4	AACHAL	F	H	36	14	28	24	59
5	SHANTNU	M	H	68	17	31	4	65
6	MONA SARLE	F	H	69	13	22	46	56
7	VISHAL JARE	M	H	63	15	39	21	88
8	SOMNATH	M	H	45	20	48	10	93
9	CHANDRASHEKHAR	M	H	44	13	31	34	86
10	AJITDURVE	M	H	39	9	16	20	42
11	PRAVIN	M	H	70	6	12	13	33
12	LOKESH	M	H	38	12	19	18	44
13	NIKITA	F	H	47	9	31	20	59
14	MINAL SHAHU	F	H	64	20	33	35	34
15	VIKASH	M	H	33	18	42	30	62
16	KHUSHI	F	H	61	16	46	30	88
17	ROSHNI	F	H	49	11	24	19	44
18	AARTI	F	H	49	15	34	27	79
19	SHIVANI	F	H	55	19	31	31	63
20	PRAVIN	M	H	49	8	22	16	26

SCHOOL NAME-BHARAT BHARTI SCHC CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	IEDIUI	EDUC.AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	YOGESH	M	H	68	9	23	49	81
2	SHIVAM	M	H	48	12	14	18	44
3	CHANDRASHEKHAR	M	H	39	11	12	16	39
4	AJAY SINGH	M	H	46	6	32	38	76
5	LALIT	M	H	64	13	11	3	27
6	JENENDRA	M	H	55	20	21	8	49
7	MITHLESH	M	H	60	18	30	38	86
8	RAJKUMAR	M	H	63	19	22	5	46
9	AAKASH	M	H	62	20	27	12	59
10	AAKASH DANGE	M	H	56	15	19	4	38
11	VIKRAM JAIN	M	H	54	18	16	10	44
12	PAVAN	M	H	39	20	28	10	58
13	ARUN	M	H	60	9	35	47	91
14	LALA	M	H	65	7	38	40	85
15	SURAJ	M	H	51	11	14	20	45
16	SHUBHAM	M	H	50	14	16	8	38
17	PRASHANT	M	H	60	18	20	9	47
18	KARAN	M	H	62	20	18	33	71
19	ABHIJIT	M	H	48	11	29	45	85
20	MAHENDRA	M	H	64	13	38	38	89

SCHOOL NAME-LIFE CAREER H.SEC. S CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIUI	EDUC. A(	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	MAYUR SHAHU	M	E	89	7	11	21	39
2	PRANITA	F	E	55	14	17	15	46
3	KUNAL	M	E	54	11	12	58	81
4	PALAK	F	E	72	16	33	32	81
5	MANISH	M	E	66	7	9	33	49
6	DIPANSU	M	E	34	18	14	31	63
7	HARSHA	F	E	61	13	17	35	65
8	SHITAL	F	E	61	14	24	30	68
9	CHANDRAKANT	M	E	58	11	18	20	49
10	RANUKA	F	E	35	13	14	18	45
11	PAYAL	F	E	84	19	20	17	56
12	RAJNISH	M	E	57	18	30	43	91
13	DERSHAN	M	E	47	14	28	40	82
14	HIMANSHU	M	E	35	15	16	13	44
15	SUNITA VARMA	F	E	36	11	18	9	38
16	HEMA SHAHU	F	E	62	9	22	13	44
17	NIVEDITA	F	E	71	14	41	26	81
18	SARANG	M	E	56	16	16	7	39
19	JIGYANSU	M	E	53	11	13	22	46
20	NEHA	F	E	45	18	38	20	76

SCHOOL NAME-K.V.AMLA M P CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIUI	EDUC. A(	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	ADITI PATHERIYA	F	E	72	16	23	39	78
2	PAYAL	F	E	69	19	36	26	81
3	AMBUJ	M	E	76	7	28	49	84
4	AAKASH SONI	M	E	63	5	24	20	49
5	HIMANU	M	E	62	13	48	7	68
6	AYAN	M	E	90	12	24	6	42
7	NITISH	M	E	57	7	19	30	56
8	HAMANT	M	E	63	20	16	5	41
9	AVANDITHI	F	E	76	8	13	14	35
10	KHUSBOO SONI	F	E	63	6	19	30	55
11	PRAFUL	M	E	63	18	25	23	66
12	TARUN	M	E	66	11	13	47	71
13	KASTUB	M	E	69	12	33	18	63
14	SHORYA SONI	M	E	61	12	16	39	67
15	KUNAL DEEP	M	E	68	9	15	52	76
16	VIJAY YADAV	M	E	66	14	18	27	59
17	NITIN KUMAR	M	E	68	20	34	27	81
18	ALAYAN	M	E	76	15	23	7	45
19	MUKAUL	M	E	55	13	18	17	48
20	SIVAM SHAHU	M	E	59	20	19	22	61

SCHOOL NAME-R D PUBLIC SCHOOL B CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIUM	EDUC. ACHIE	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	NITYA PAWAR	F	E	70	16	23	39	78
2	PALASH	M	E	52	19	23	26	68
3	ANSHUL	M	E	87	7	36	49	92
4	PHILIP	M	E	52	5	28	20	53
5	SHUBHM	M	E	73	13	24	7	44
6	DIPANSU	M	E	64	12	48	6	66
7	NEHA	F	E	81	7	24	30	61
8	AALIYA ALI	F	E	77	20	19	5	44
9	NIKHIL	M	E	70	8	16	14	38
10	SHARDA	F	E	70	6	13	30	49
11	PRASHANT	M	E	47	18	19	23	60
12	NAMRATA	F	E	66	11	25	47	83
13	SHURTI	F	E	65	12	13	18	43
14	PRACHI	F	E	48	12	33	39	84
15	HAPPY	F	E	71	9	16	52	77
16	AB HISHEKH	M	E	55	14	15	27	56
17	PYUSH	M	E	89	20	18	27	65
18	KIRTI	F	E	69	15	34	7	56
19	HETVI	F	E	47	13	23	17	53
20	DIVYANSU	M	E	43	20	18	22	60

SCHOOL NAME-NAVODYA VIDYALAYA CLASS-11th maths

S.NO.	STUDENT NAME	SEX	MEDIUM	EDUC. AC	SOCIAL ADJUSTMEMT			TOTAL
					TDS	EAS	SMS	SAS
1	NITESH	M	E	58	11	25	40	76
2	AJAY	M	E	56	16	31	34	81
3	VISHAL	M	E	53	12	16	21	49
4	SHUBHAM	M	E	67	19	16	26	61
5	ROHIT	M	E	51	14	24	43	81
6	CHATAN	M	E	54	13	18	13	44
7	REENA	F	E	54	7	12	19	38
8	SHUBHANGI	F	E	66	20	31	33	84
9	SHIVANI	F	E	53	17	28	46	91
10	SANJANA	F	E	71	19	33	34	86
11	TEENA	F	E	75	20	27	12	59
12	KAPIL	M	E	60	20	31	8	59
13	YASHIKA	F	E	50	11	16	34	61
14	MEGENDRA	M	E	50	8	26	42	76
15	SHELENDRA	M	E	54	17	20	11	48
16	DEEPRAJ	M	E	55	13	12	29	54
17	AMARDEEP	M	E	47	6	14	16	36
18	RISHABH	M	E	77	9	11	29	49
19	NAVIN	M	E	69	7	24	20	51
20	AMIT KUMAR	M	E	61	14	26	28	68

4.10 शोध के उद्देश्य–

1 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

2 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लिंग अनुसार ज्ञात करना।

3 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

4 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

5 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

6 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन ज्ञात करना।

7 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन लिंग अनुसार ज्ञात करना

8 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

9 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

10 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

11 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

4.11 शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है क्योंकि शोध में प्रयुक्त चर सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में कोई सही दिशा प्राप्त न होने के कारण शोधार्थी ने अपने अनुभव एवं ज्ञान के अनुसार शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है।

शून्य परिकल्पनाए जो निम्नलिखित है:-

अ शोध की परिकल्पनाएँ

1अ- छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

2अ- छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

3अ- शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

4अ- अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

5अ- सी.बी.एस.ई. विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

6अ- म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

7अ- हिन्दी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

8अ- अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों कीशैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

9अ- विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

स शोध की उप.परिकल्पनाएँ

1.ब- छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2.ब- छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

3.ब- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4.ब- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

5.ब- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

6.ब- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

7.ब- हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

8.ब- हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

4.2 प्रथम भाग–न्यादर्श का विवरण

तालिका कमांक –3

विद्यार्थियों कि संख्या

क्र.	विद्यार्थियों की संख्या	लिंग	प्रतिशत
1	126	छात्र	63
2	74	छात्राए	37

प्रस्तुत तालिका अनुसार ज्ञात होता है कि शोध में विद्यार्थियों की संख्या कुल 200 है इसमें छात्रों की संख्या 126 एवं छात्राओं की संख्या 74 है। शोध में विद्यार्थियों को लिंग अनुसार तालिका में विभाजित किया गया है।

ग्रॉफ क्रमांक –1

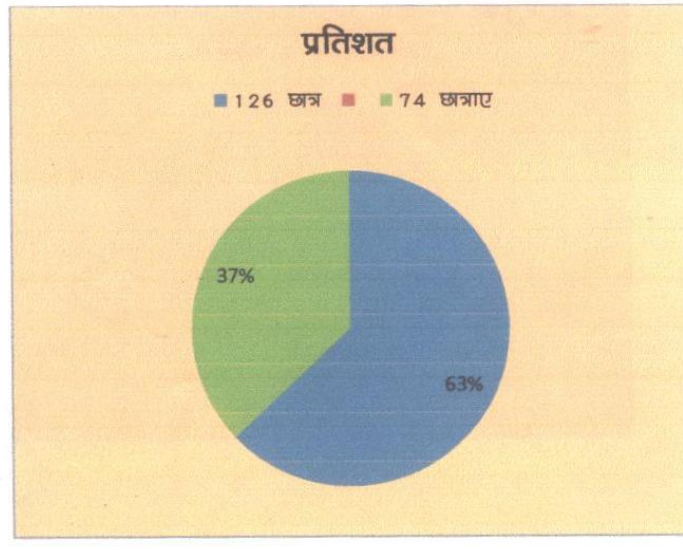

प्रस्तुत ग्राफ अनुसार ज्ञात होता है कि छात्रों की संख्या छात्राओं की संख्या से अधिक है शोध के कुल 10 विद्यालयों में से प्राप्त विद्यार्थियों को ग्राफ अनुसार दर्शाया गया हैं।

तालिका कमांक –4

प्रबंधन अनुसार विद्यालय

क्रं.	प्रबंधन	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	शासकीय	120	60
2	अशासकीय	80	40

प्रस्तुत तालिका अनुसार ज्ञात होता है कि शासकीय प्रबंधन अनुसार विद्यार्थियों की संख्या 120 है एवं अशासकीय प्रबंधन अनुसार विद्यार्थियों की संख्या 80 है।

ग्रॉफ क्रमांक –2

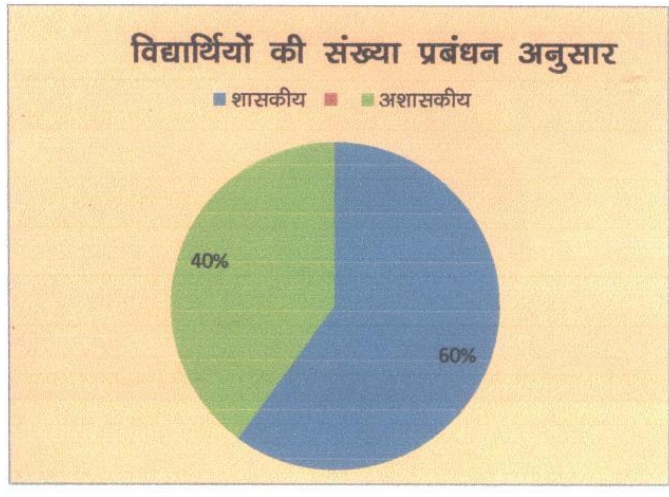

प्रस्तुत ग्राफ अनुसार ज्ञात होता है कि शोध में शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रतिशत 60 है एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रतिशत 40 है शोध हेतु दोनों प्रबंधन के विद्यालयों को लिया गया है।

तालिका क्रमांक –5

प्रशासन अनुसार विद्यालय

क्रं.	प्रशासन	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	के.मा.शि.म.दिल्ली	60	30
2	मा.शि.म.भोपाल (म.प्र.)	140	70

प्रस्तुत तालिका अनुसार ज्ञात होता है कि शिक्षा के प्रशासन अनुसार विद्यालयों को दो भागों में बांटा गया है प्रथम केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल (म.प्र.) इनके विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 60 एवं 140 है।

ग्रॉफ क्रमांक –3

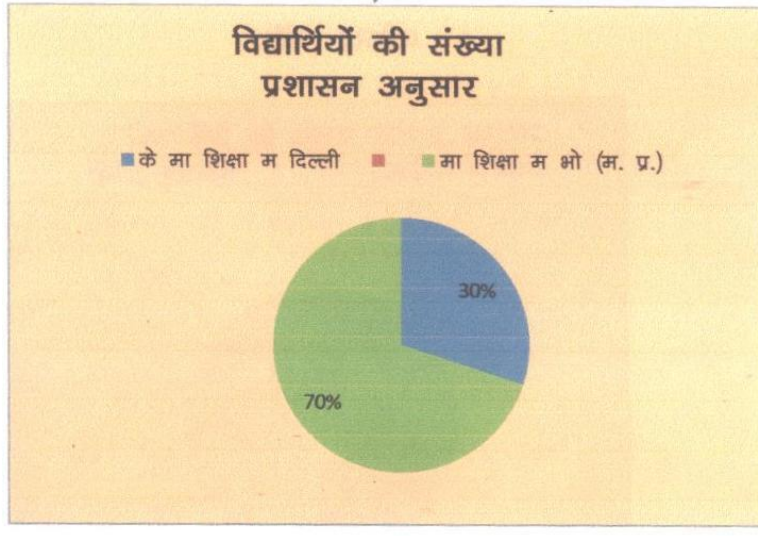

प्रस्तुत ग्राफ अनुसार ज्ञात होता है केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों का प्रतिशत 30 है एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के विद्यार्थियों का प्रतिशत 70 है जो कि शोध में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

तालिका क्रमांक –6

माध्यम अनुसार विद्यालय

क्रं.	माध्यम	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	हिन्दी माध्यम	100	50
2	अंग्रेजी माध्यम	100	50

प्रस्तुत तालिका अनुसार ज्ञात होता है कि शोध में हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 100–100 है।

ग्रॉफ क्रमांक –4

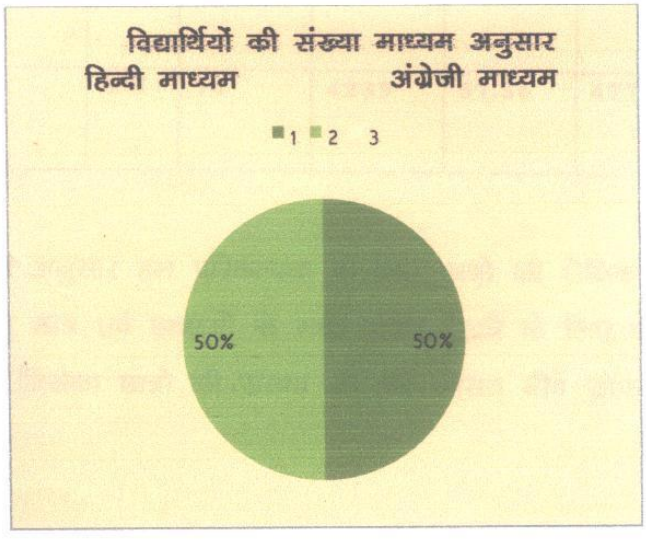

प्रस्तुत ग्रॉफ अनुसार ज्ञात होता है कि शोध में विद्यार्थियों की संख्या का प्रतिशत क्रमशः 50–50 है जिन्हें हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम अनुसार बांटा गया है। शोध में दोनों माध्यम के विद्यार्थियों को लिया गया है।

द्वितीय भाग– चरों के मध्य संबंध

इस भाग में चरों के मध्य संबंध ज्ञात करने हेतु दो स्वतंत्र चरों सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध एक आश्रित चर छात्र, छात्रा, शासकीय, अशासकीय, हिन्दी, अंग्रेजी, सी.बी.एस.ई. और म.प्र. बोर्ड के माध्यम से प्राप्त किया गया है।

उद्देश्य–2 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लिंग अनुसार ज्ञात करना।

उद्देश्य–7 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन लिंग अनुसार ज्ञात करना

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

तालिका क्रमांक –7

क्रं.	समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
1	छात्र	126	7213	57.24	7982	63.34
2	छात्रा	74	4239	57.36	4774	64.51

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन हेतु छात्र एवं छात्राओ के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका छात्रो की संख्या अनुसार औसत नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पना .1अ– छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –8

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
छात्र	126	7213	57.24	7982	63.34

तालिका कमांक –9

सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
126	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	57.24 63.34	-0.094	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ कमांक –5

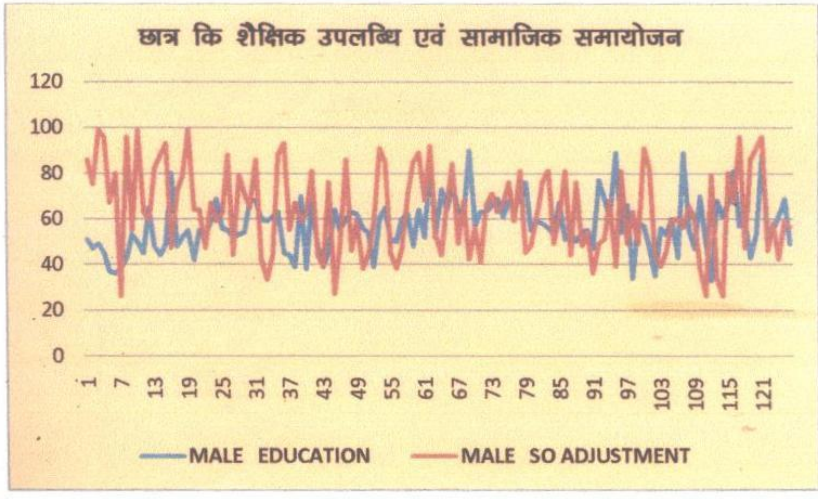

Df=124

0.05 स्तर पर .174

0.01 स्तर पर .228

परिकल्पना की जॉच करने हेतु कार्लपिर्यसन सहसंबंध संख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें पाया गया है। कि दोनों चरो के बीच -0.094 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि ऋणात्मक सहसंबंध है। सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f=124) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .174 एवं 0.01 स्तर पर .228 मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि '' छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ऋणात्मक है''। इस प्रकार प्रस्तुत r का मान अनुसार हम कह सकते हैं कि छात्र की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध ऋणात्मक होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .2अ– छात्राओ कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –10

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
छात्राएँ	74	4239	57.28	4774	64.51

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन हेतु छात्राओ के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका छात्राओ की संख्या अनुसार नीचे संबंध प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक –11

सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
74	शैक्षिक उपलब्धि	57.28	0.050	सार्थक संबंध नही है।
	सामाजिक समायोजन	64.51		

ग्रॉफ कमांक –6

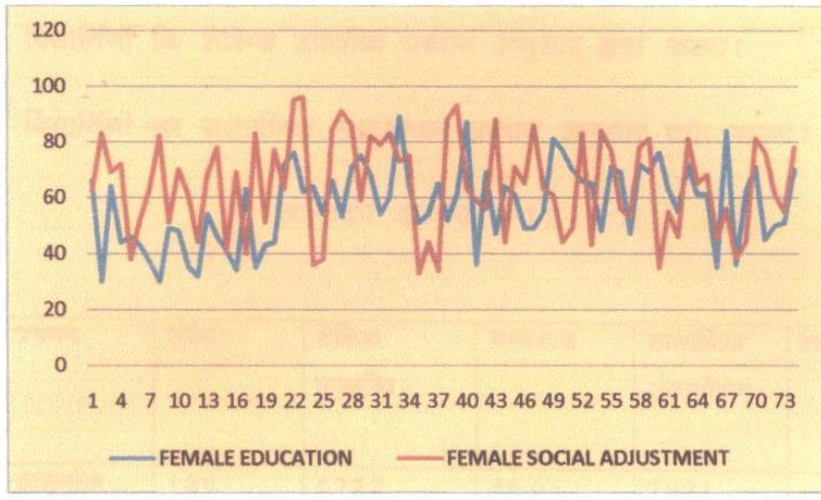

Df=72

0.05 स्तर पर .232

0.01 स्तर पर .302

दोनों चरो के बीच 0.050का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि नाम मात्र धनात्मक सहसंबंध है। सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निशचित डी.एफ. (d.f.=72) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .232 एवं 0. 01 स्तर पर .302केमान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजनके मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष– शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंधनाम मात्र धनात्मक सहसंबंधहै''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

उद्देश्य–3 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

उद्देश्य–8 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

तालिका कमांक –12

कं.	प्रबंधन	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
1	शासकीय	120	6722	56.01	7931	66.09
2	अशासकीय	80	4736	59.20	4825	60.31

परिकल्पना .3अ– शासकीय विद्यालय अनुसार विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –13

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
शासकीय	120	6722	56.01	7931	66.09

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए शासकीय विद्यालय अनुसार विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक –14

शासकीय प्रबंधन अनुसार सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
120	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	56.01 66.09	-0.087	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ कमांक –7

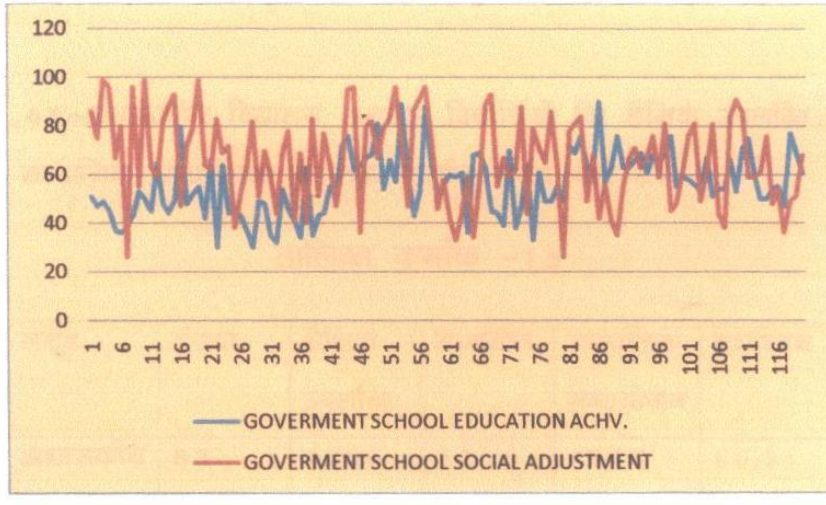

Df=118

0.05 स्तर पर .174

0.01 स्तर पर .228

दोनों चरो के बीच-0.087 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि ऋणात्मक सहसंबंध है।सहसंबंध .गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=118) का मान देखकर ज्ञात

होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .174 एवं .01 स्तर पर .228केमान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजनके मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ऋणात्मक सहसंबंध है''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .4अ–अशासकीय विद्यालय अनुसार विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका क्रमांक –15

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
अशासकीय	**80**	**4736**	59.20	**4825**	60.31

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए अशासकीय विद्यालय अनुसार विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक –16

अशासकीय प्रबंधन अनुसार सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
80	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	59.20 60.31	0.116	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ कमांक –8

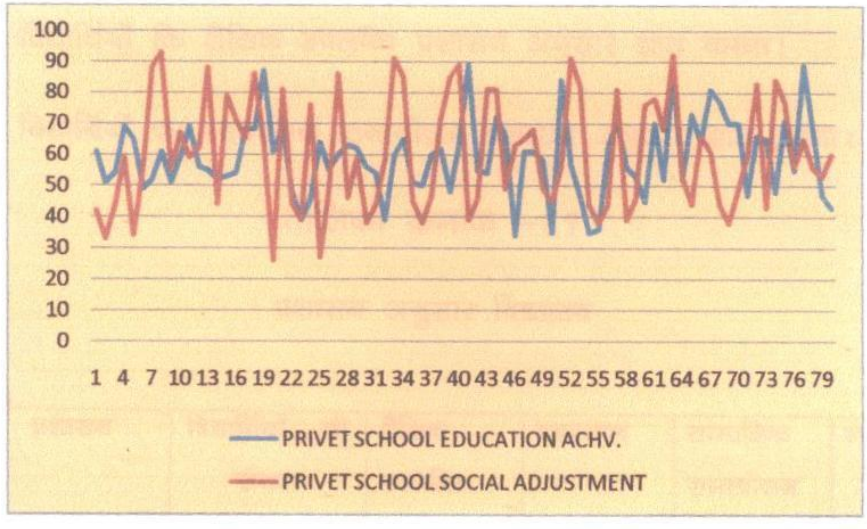

Df=78

0.05 स्तर पर .217

0.01 स्तर पर .283

दोनों चरो के बीच0.116का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि नाम मात्र धनात्मक सहसंबंधहै।सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=78) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .217एवं .01 स्तर पर .283केमान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजनके मध्य सार्थक सह संबंध धनात्मक नाम मात्र है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य धनात्मक सहसंबंध है''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

उद्देश्य–4 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

उद्देश्य–9 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

तालिका कमांक –17

प्रशासन अनुसार विद्यालय

कं.	प्रशासन	विद्यार्थियों की संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
1	**CBSE**	60	3819	63.65	3708	61.8
2	**M.P.BOARD**	140	7639	54.56	9048	64.62

परिकल्पना .5अ–सी.बी.एस.ई. विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका क्रमांक –18

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
CBSE	60	3819	63.65	3708	61.8

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए सी.बी.एस.ई.विद्यालय के विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक –19

के मा शिक्षा म दिल्ली प्रशासन अनुसार सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
60	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	63.65 61.8	0.024	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ क्रमांक –9

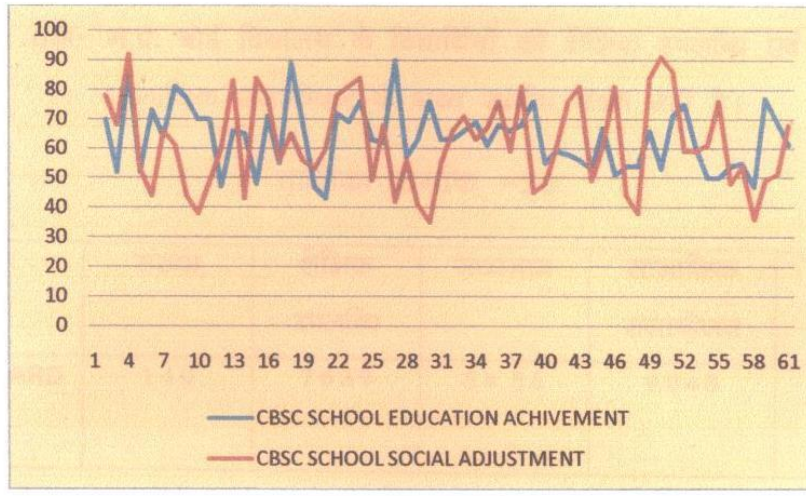

Df=58

0.05 स्तर पर .250

0.01 स्तर पर .325

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल Regional Institute of Education, Bhopal पुस्तकालय Library

दोनों चरो के बीच0.024 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि नाम मात्र धनात्मक सहसंबंधहै।सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=58) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर . 250एवं .01 स्तर पर .325 के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंधनाम मात्र धनात्मक सहसंबंधहै"। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .6अ– म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –20

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
M.P.BOARD	140	7639	54.56	9048	64.62

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यालय के विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक –21

मा शिक्षा म भो (म. प्र.)प्रशासनअनुसार सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
140	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	54.56 64.62	-0.013	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ क्रमांक –10

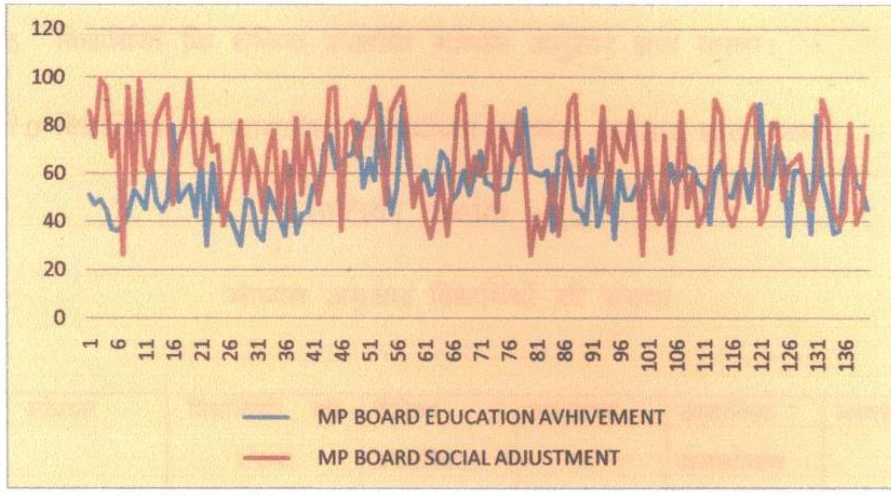

Df=138

0.05 स्तर पर .208

0.01 स्तर पर .159

दोनों चरो के बीच-0.013 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि ऋणात्मक सहसंबंध है। सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=138) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .208 एवं .01 स्तर पर .159के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ऋणात्मक सहसंबंध है''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

उद्देश्य–5 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

उद्देश्य–10 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

तालिका कमांक –22

माध्यम अनुसार विद्यार्थियों की संख्या

कं.	माध्यम	विद्यार्थियों की संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
1	हिन्दी माध्यम	100	5229	52.29	6405	64.05
2	अंग्रेजी माध्यम	100	6229	62.29	6351	63.51

परिकल्पना .7अ– हिन्दी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –23

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
हिन्दी माध्यम	100	5229	52.29	6405	64.05

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए हिन्दी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक –24

हिन्दी माध्यम अनुसार सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
100	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	52.29 64.05	-0.147	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ कमांक –11

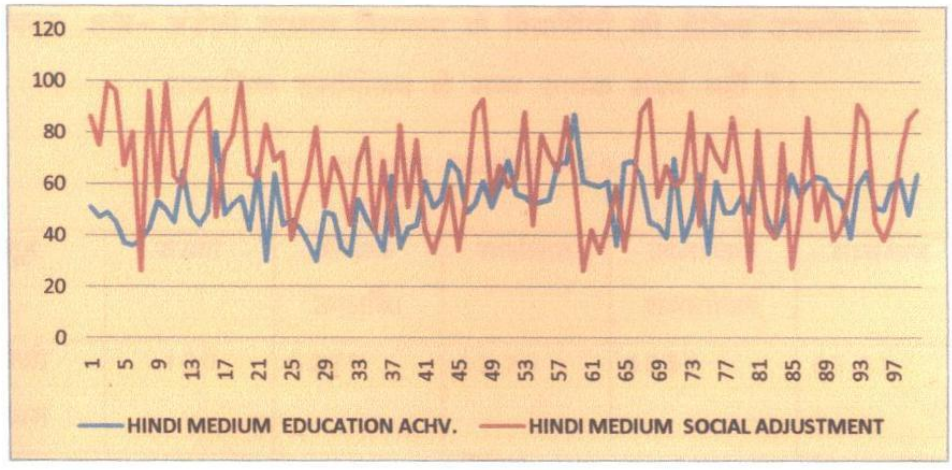

Df=98

0.05 स्तर पर .205

0.01 स्तर पर .267

दोनों चरो के बीच-0.147 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि ऋणात्मक सहसंबंध है। सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=98) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .205 एवं .01 स्तर पर .267 के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंधऋणात्मक सहसंबंधहै''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .8अ– अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –25

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान	सामाजिक समायोजन	मध्यमान
अंग्रेजी माध्यम	100	6229	62.29	6351	63.51

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक –26

अंग्रेजीमाध्यम अनुसार सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
100	शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक समायोजन	62.29 63.51	0.105	सार्थक संबंध नही है।

ग्रॉफ क्रमांक –12

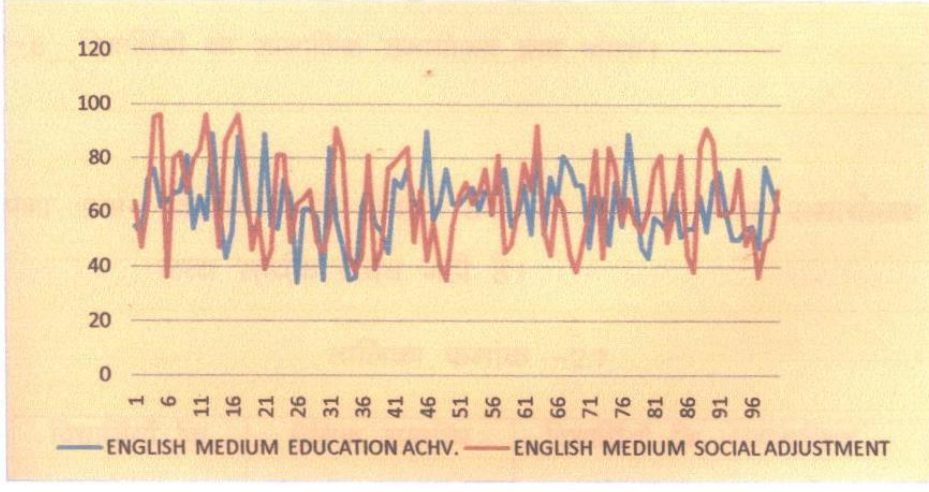

Df=98

0.05 स्तर पर .195

0.01 स्तर पर .254

दोनों चरो के बीच 0.105 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि नाम मात्र धनात्मक सहसंबंध है। सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=98) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .195 एवं .01

स्तर पर .254केमान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष– शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंधनाम मात्र धनात्मक सहसंबंधहै''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध कम मात्रा मे होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

उद्देश्य–1 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

उद्देश्य–6 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन ज्ञात करना।

परिकल्पना 9अ– विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक –27

विद्यार्थियों कि संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थियों कि संख्या	सामाजिक समायोजन
200	11452	200	12756

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका संबंध विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक –28

विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध सार्थकता

आवृति	चर	कुल	मध्यमान	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
200	शैक्षिक उपलब्धि	11458	57.29	-0.02	सार्थक संबंध नही है।
	सामाजिक समायोजन	12756	63.78		

ग्रॉफ कमांक –13

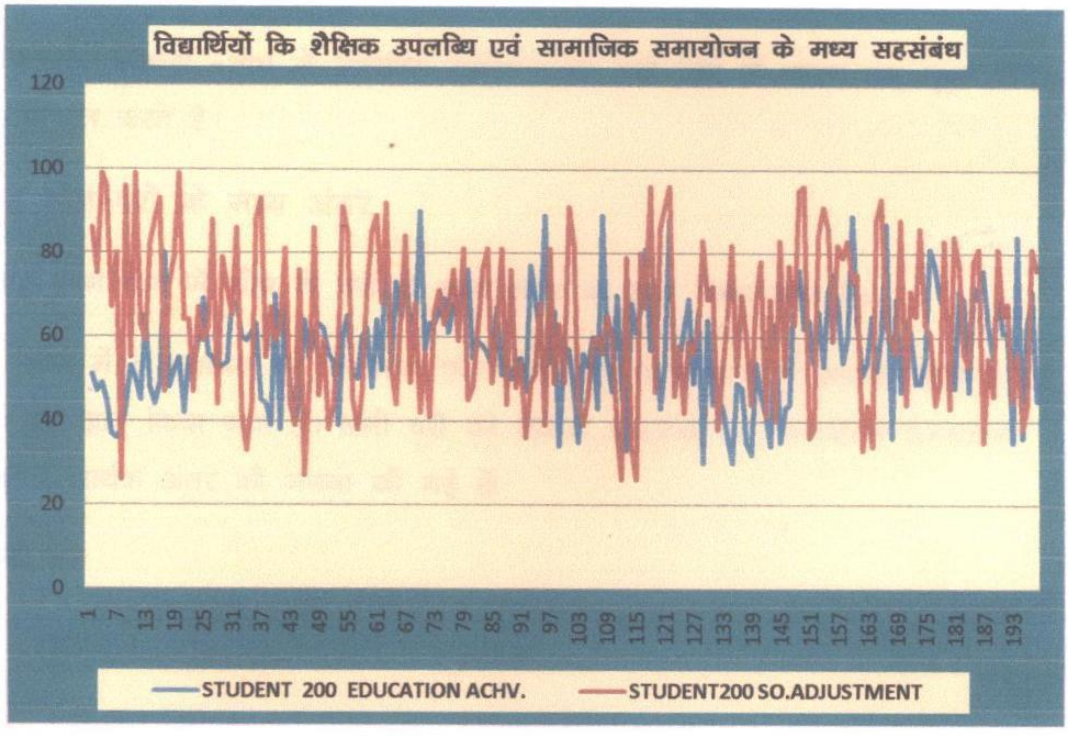

Df=198

0.05 स्तर पर .138

0.01 स्तर पर .181

दोनों चरो के बीच-0.02 का सहसंबंध प्राप्त हुआ है जो कि ऋणात्मक सहसंबंध है।सहसंबंध गुणांक r के मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान देखकर ज्ञात होता है कि r =-0.02 का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर .138 एवं .01 स्तर पर .181केमान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजनके मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

निष्कर्ष–शोध से हम कह सकते है कि ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ऋणात्मक सहसंबंध है''। इस प्रकार प्रस्तुत r मान अनुसार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

भाग तीन–चरों के मध्य अंतर

प्रस्तुत भाग तीन में शोध के चरों के मध्य अंतर का ज्ञात किया गया है।

इस भाग में दो आश्रित चरों के मध्य एक स्वतंत्र चर के माध्यम से सार्थक अंतर है या नहीं यह ज्ञात किया गया है। सभी चरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के अनुसार सार्थक अंतर की गणना की गई लें

अन्य चर

1. छात्र	2.छात्रा
3. शासकीय विद्यालय	4. अशासकीय विद्यालय
5. के.मा.शि.मं. दिल्ली	6. मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.
7 हिन्दी माध्यम	8 अंग्रेजी माध्यम

परिकल्पना .1ब- छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका कमांक -29

कं.	समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि	मध्यमान
1	छात्र	126	7213	57.24
2	छात्रा	74	4239	57.36

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका औसत मान विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक -14

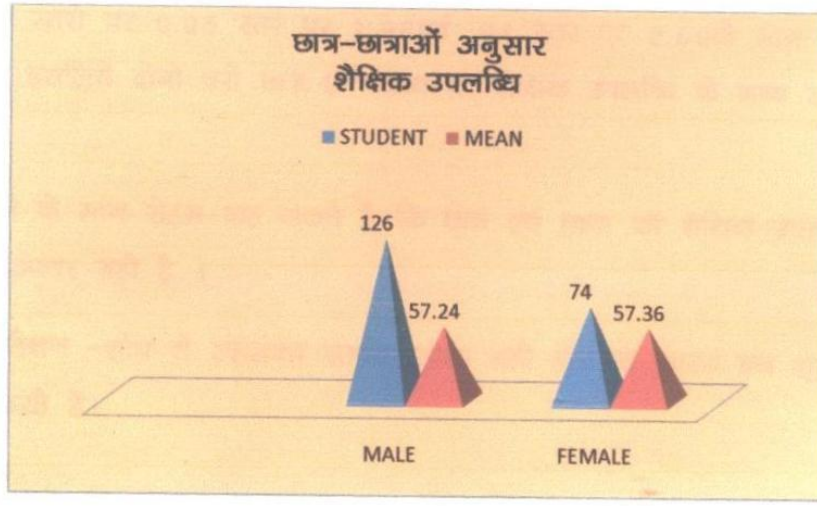

तालिका कमांक -30

छात्र-छात्रा अनुसार शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता का स्तर

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
छात्र छात्रा	126 74	57.24 57.36	11.81 14.29	0.12	1.84	0.06	सार्थक अन्तर नही है।

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच क्रांतिक अनुपातका मान 0.06प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर क्रांतिक मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98एवं .01 स्तर पर 2.60के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों **छात्र एवं छात्रा** का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष-सारणी के मान सेहम कह सकते है कि **छात्र एवं छात्रा** की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नही है ।

परिकल्पना परीक्षण -शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .2ब- छात्र-छात्रा के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका कमांक -31

सामाजिक समायोजन

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

समूह	संख्या	मध्यमान
छात्र	126	65.25
छात्राए	74	64.51

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका औसत मान विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक -15

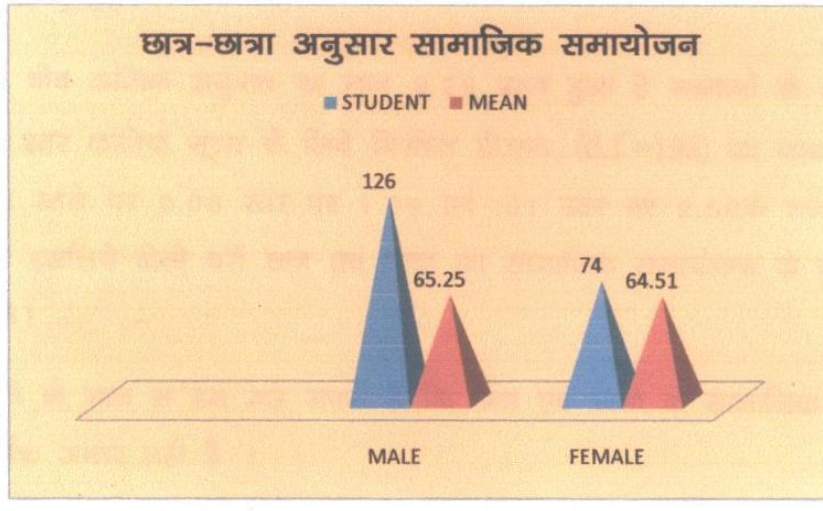

तालिका क्रमांक –32

छात्र–छात्रा अनुसार सामाजिक समायोजन की सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
छात्र	126	65.25	19.54	0.74	2.60	0.28	सार्थक अन्तर नही है।
छात्राए	74	64.51	17.30				

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच क्रांतिक अनुपात का मान 0.28 प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर क्रांतिक मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.60के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों **छात्र एवं छात्रा** का सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष–सारणी के मान स`हम कह सकते है कि **छात्र एवं छात्रा** के **सामाजिक समायोजन** के मध्य सार्थक अन्तर नही है ।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .3ब– शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका कमांक –33

प्रबंधन अनुसार शैक्षिक उपलब्धि

प्रबंधन	संख्या	मध्यमान
शासकीय	120	56.01
अशासकीय	80	59.17

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका औसत मान विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक –16

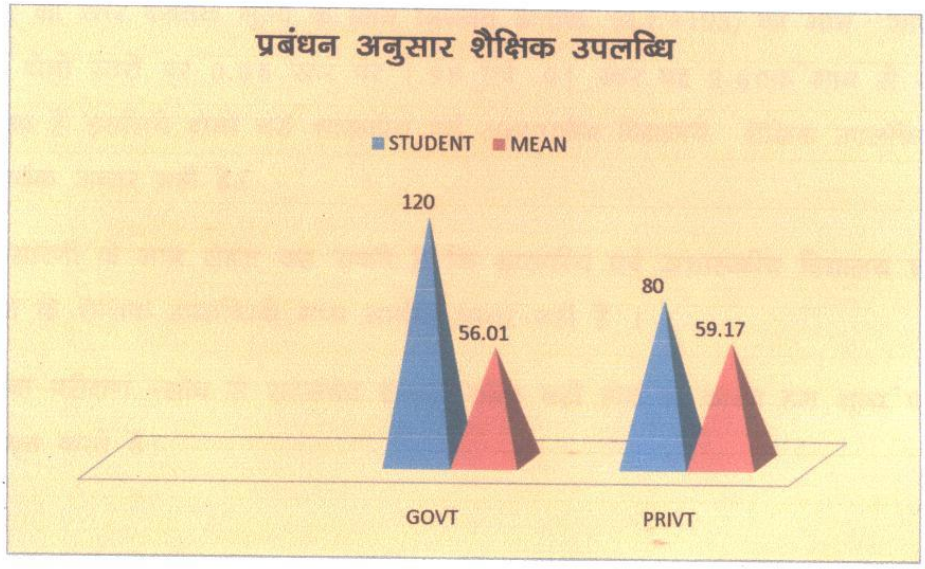

तालिका क्रमांक –34

प्रबंधन अनुसार शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	कांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
शासकीय	120	56.01	12.96	3.16	1.78	1.77	सार्थकअन्तर नही है।
अशासकीय	80	59.17	12.35				

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच कांतिक अनुपात का मान 1.77 प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर कांतिक मूल्य के लिये निशचित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.60क मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष–सारणी के मान सेहम कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय छात्र एवं छात्रा के शैक्षिक उपलब्धिके मध्य सार्थक अन्तर नही है ।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना 4.ब– शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन मे सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका कमांक –35

प्रबंधन अनुसार सामाजिक समायोजन

प्रबंधन	संख्या	मध्यमान
शासकीय	120	66.78
अशासकीय	80	60.31

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन में अन्तर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका औसत मान विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक –17

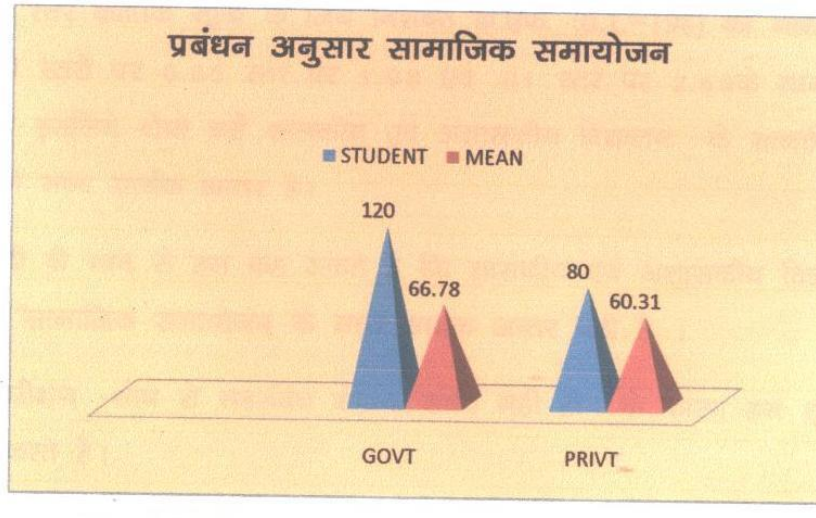

तालिका कमांक -36

प्रबंधन अनुसार सामाजिक समायोजन की सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	कांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
शासकीय	120	66.78	17.90	6.47	2.53	2.55	सार्थक अन्तर नही है।
अशासकीय	80	60.31	17.98				

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच कांतिक अनुपात का मान 2.55 प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर कांतिक मूल्य के लिये निशचित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.60के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–सारणी के मान से हम कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय छात्र एवं छात्रा के सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नही है ।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना 5.ब– केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

तालिका कमांक –37

प्रशासन अनुसार शैक्षिक उपलब्धि

समूह	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि
CBSC	60	63.65
MPBOARD	140	54.63

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका औसत मान विद्यार्थियों की संख्या अनुसार नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक –18

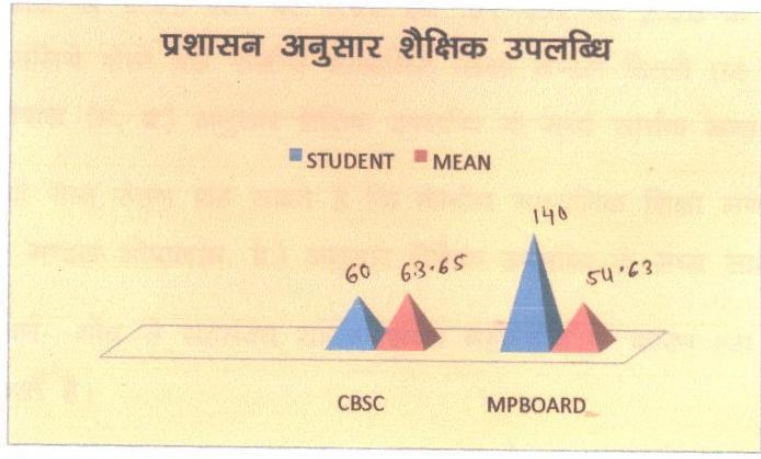

तालिका क्रमांक –38

शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
CBSC	60	63.65	10.74				सार्थक
MPBOARD	140	54.63	12.63	9.02	1.65	5.46	अन्तर है।

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच क्रांतिक अनुपात का मान 5.46 प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर क्रांतिक मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.60 के मान से अधिक प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल (म. प्र.) अनुसार शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–सारणी के मान सेहम कह सकते है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल(म. प्र.) अनुसार शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को अस्वीकृत करते है।

परिकल्पना 6.ब– केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका कमांक –39

प्रशासन अनुसार सामाजिक समायोजन

प्रबंधन	संख्या	मध्यमान
CBSC	60	61.84
MPBOARD	140	64.62

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्य अंतर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका विद्यार्थियों की संख्या अनुसार औसत मान नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक –19

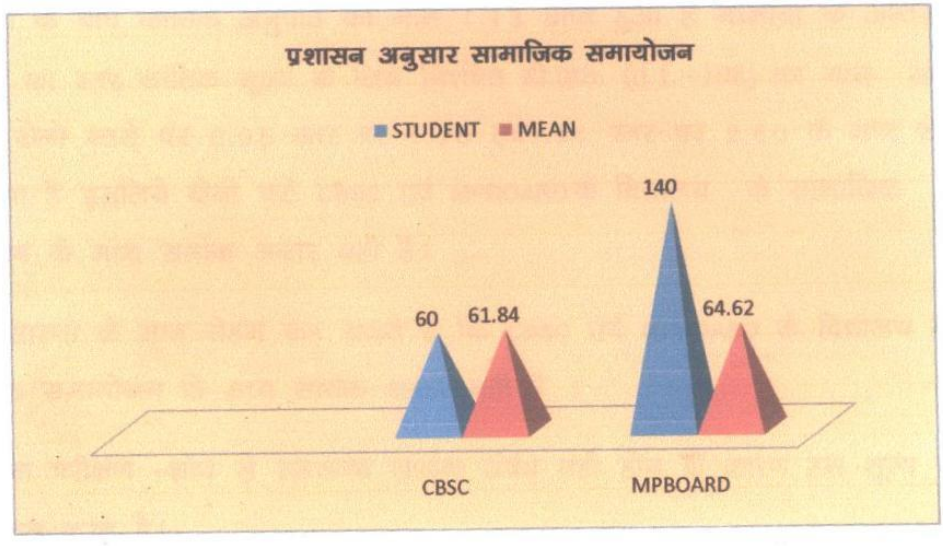

सामाजिक समायोजन की सार्थकता

तालिका क्रमांक -40

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
CBSC	60	61.84	15.32	2.78	2.45	1.13	सार्थक अन्तर नही है।
MPBOARD	140	64.62	19.46				

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच क्रांतिक अनुपात का मान 1.13 प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर क्रांतिक मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.60 के मान से कम प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों **CBSC** एवं **MPBOARD** के विद्यालय के **सामाजिक समायोजन** के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष–सारणी के मान सेहम कह सकते है कि **CBSC** एवं **MPBOARD** के विद्यालय के **सामाजिक समायोजन** के मध्य सार्थक अन्तर नही है ।

परिकल्पना परीक्षण –शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को स्वीकृत करते है।

परिकल्पना .7.ब– हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका कमांक –41

माध्यम अनुसार शैक्षिक उपलब्धि

समूह	संख्या	मध्यमान
हिन्दी माध्यम	100	52.29
अंग्रेजी माध्यम	100	62.29

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका विद्यार्थियों की संख्या अनुसार औसत मान नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक –20

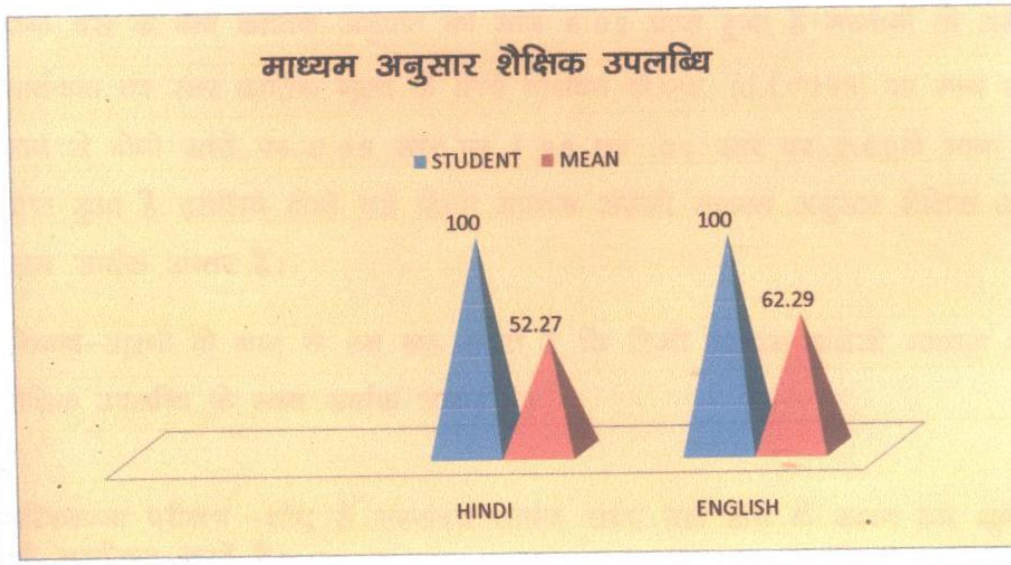

प्रस्तुत ग्रॉफ अनुसार दर्शाया गया है कि हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 100-100 एवं इन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का औसत मान क्रमशः 52. 27 एवं 62.29 है।

तालिका क्रमांक -42

माध्यम अनुसार शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
हिन्दी माध्यम	100	52.29	11.42	10	1.66	6.02	सार्थक अन्तरहै।
अंग्रेजी माध्यम	100	62.29	12.91				

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच क्रांतिक अनुपात का मान 6.02 प्राप्त हुआ है मध्मानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर क्रांतिक मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरो पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.60के मान से अधिक प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों हिन्दी माध्यम अंग्रेजी माध्यम अनुसार शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष-सारणी के मान से हम कह सकते है कि हिन्दी माध्यम अंग्रेजी माध्यम अनुसार शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना परीक्षण -शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को अस्वीकृत करते है।

परिकल्पना .8ब– हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

माध्यम अनुसार सामाजिक समायोजन

तालिका कमांक –43

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education
पुस्तकालय

माध्यम	संख्या	मध्यमान
हिन्दी माध्यम	100	64.68
अंग्रेजी माध्यम	100	63.51

प्रस्तुत तालिका अनुसार हम परिकल्पना के लिए विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन हेतु हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के मध्य अंतर देखने के लिए चरों का मध्यमान ज्ञात किया गया है जिसका विद्यार्थियों की संख्या अनुसार औसत मान नीचे ग्रॉफ की सहायता से प्रस्तुत किया गया है।

ग्रॉफ कमांक –21

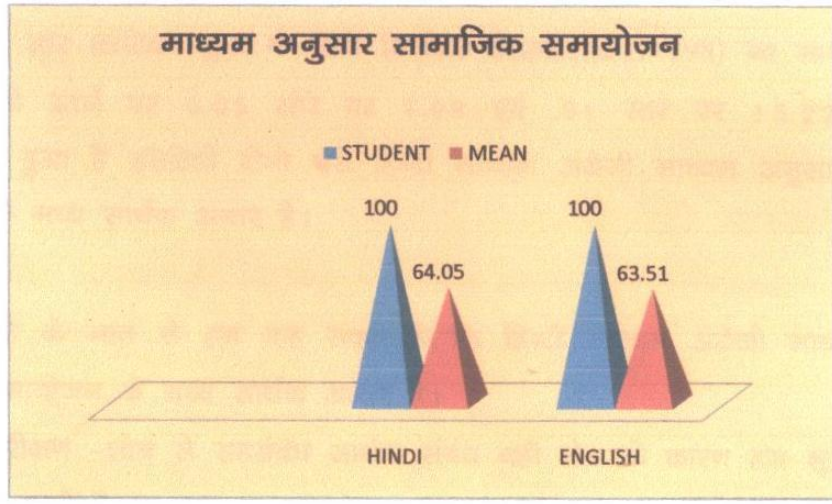

प्रस्तुत ग्रॉफ अनुसार दर्शाया गया है कि हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 100-100 एवं इन विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन का औसत मान क्रमशः 64.05 एवं 63.51 है।

तालिका क्रमांक -44

माध्यम अनुसार सामाजिक समायोजन की सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक विचलन त्रुटि	कांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
हिन्दी माध्यम	100	64.05	17.02	1.37	0.09	15.22	सार्थक अन्तर है।
अंग्रेजी माध्यम	100	63.51	12.91				

Df=198

0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.60

दोनों चरो के बीच क्रांतिक अनुपात का मान 15.22 प्राप्त हुआ है मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का स्तर क्रांतिक मूल्य के लिये निश्चित डी.एफ. (d.f.=198) का मान सारणी के मान से दोनो स्तरों पर 0.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 15.22के मान से अधिक प्राप्त हुआ है इसलिये दोनो चरों हिन्दी माध्यम अंग्रेजी माध्यम अनुसार सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष-सारणी के मान से हम कह सकते है कि हिन्दी माध्यम अंग्रेजी माध्यम अनुसार सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना परीक्षण -शोध से सहसंबंध सार्थक संबंध नही होन के कारण हम शून्य परिल्पना को अस्वीकृत करते है।

प्रस्तुत शोध निष्कर्ष

1 प्रस्तुत शोध संख्यात्मक प्रकार का शोध है यह शोध एक व्यावहारिक शोध है। 2. प्रस्तुत शोध एक विवरणात्मक पद्धति को शोध है इस शोध में सर्वे अध्ययन विधि का उपयोग किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध हेतु मानकीकृत सामाजिक समायोजन मापनी का उपयोग किया है। 3. प्रस्तुत शोध हेतु बैतूल जिले के 10 विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। विद्यार्थियों का चयन लॉटरी विधि से किया गया है।

2 शोध हेतु 6 शासकीय एवं 4 अशासकीय विद्यालय को लिया गया है।

3 शोध हेतु कुल 200 विद्यार्थियों में से 126 बालक 63 प्रतिशत एवं 74 बालिकाएं 37 प्रतिशत हैं।

4 शोध हेतु कुल 5 विद्यालय हिन्दी माध्यम के एवं 5 विद्यालय अंग्रेजी माध्यम के है।

5 शोध के अनुसार विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य -0.02 का सहसंबंध है

6 छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक संबंध नहीं है।

7. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक संबंध नहीं है।

8. शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

9. अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मंध्य सार्थक संबंध नहीं है।

10. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल दिल्ली के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

11. माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

12. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

13. अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

14. शोध के कुल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

शोध में चरों के संबंध में का अन्तर -

1. छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

6. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

7. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

8. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

प्रस्तुत शोध में पाया गया है कि हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है साथ ही CBSE एवं MP Borad के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक अन्तर पाया गया है।

प्रस्तुत शोध हेतु ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने हेतु अनेक सामाजिक एवं मनौवैज्ञानिक कारण होते है परन्तु इस शोध में शैक्षिक उपलब्धि को विद्यालय के सामाजिक समायोजन से मापा गया है एवं इस अनुसार निष्कर्ष में पाया गया है कि शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक समायोजन होना आवश्यक नहीं है।

अध्याय पंचम :–शोध संराश निष्कर्ष एवं सुझाव

1. प्रस्तावना
2. समस्या कथन
3. शोध के उद्देश्य
4. शोध के चर
5. शोध के न्यादर्श
6. शोध में प्रयुक्त उपकरण
7. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि
8. शोध की सीमाएँ
9. शोध निष्कर्ष
10. भावी शोध हेतु सुझाव

5.1 प्रस्तावनाः–

इस अध्याय में लघुशोध का संराश एवं अध्याय चार में दिये गये आकड़ो के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष एवं भविष्य में किये जाने वाले अध्ययन संबंधी सुझाओं को प्रस्तुत किया गया है।

5.2 समस्या कथन

''विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध''– एक अध्ययन

5.3 शोध के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य बनाये गये हैं, जिससे शोध से संबंधित विशेष जानकारी प्राप्त करने में शोधार्थी को सहायता मिली है।

1 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

2 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लिंग अनुसार ज्ञात करना।

3 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

4 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

5 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि माध्यमअनुसार ज्ञात करना।

6 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन ज्ञात करना।

7 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन लिंग अनुसार ज्ञात करना

8 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

9 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

10 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

11 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

5.4 शोध के चर

1. सामाजिक समायोजन

2. शैक्षिक उपलब्धी

अन्य चर

1.बालक	2.बालिका
3.हिन्दी माध्यम	4.अंग्रेजी माध्यम
5.शासकीय विद्यालय	6.अशासकीय विद्यालय
7 के.मा.शि.मं. दिल्ली	8 मा.शि.मं. भोपाल म.प्र.

5.5 शोध पद्धति :-

यह शोध विवरणात्मक पद्धति द्वारा किया जाने वाला शोध है। इसमें सर्वे अध्ययन का उपयोग किया गया है।शोध हेतु विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। विद्यार्थियों के चयन हेतु लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया है। इसमे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंधो का अध्ययन किया गया है।

5.6 शोध उपकरण-

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने निम्न शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है।

इस शोध में विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को ज्ञात करने के लिए **मनोवैज्ञानिक दैवा** द्वारा निर्मित **सामाजिक समायोजन इन्वेन्ट्री टूल** का उपयोग करके वास्तविक समाजिक समायोजन की जानकारी प्राप्त कि है।शोध हेतु विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि जानने के लिए **अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल** को विद्यालय से प्राप्त किया गया है।

5.7 शोध मे प्रयुक्त सांख्यिकी की विधि

परिकल्पना की जॉच करने हेतु कार्लपिर्यस सहसंबंध संख्यिकी विधि,मध्यमान,मानक विचलन,क्रातिंक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

5.8 शोध की सीमाऍ–

प्रस्तुत शोध की सीमाओं का निर्धारण किया गया है, जो निम्नलिखित हैः–

1. प्रस्तुत अनुसंधान मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के क्षेत्र में निहित है।
2. प्रस्तुत शोध कक्षा 11 वीं के **गणित संकाय** के विद्यार्थियों पर किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों कि आयु 16 से 18 वर्ष के बीच है।
4. प्रस्तुत शोध में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों का चयन किया गया है।
6. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों का चयन किया गया है

5.9 शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध कार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है–

1. शोध के अनुसार विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य -0.02 का सहसंबंध है
2. छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक संबंध नहीं है।
3. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक संबंध नहीं है।

4. शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

5 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

6. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल दिल्ली के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

7. माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

8. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

9. अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

10. शोध के कुल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

शोध में चरों के संबंध में का अन्तर –

1. छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. छात्र–छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

6. केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

7. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

8. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

5.10 भावी शोध हेतु सुझाव

1. विद्यालायों में शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों को देखना चाहिए

2. शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए अनेक गतिविधियो को करवाना चाहिए।

3. सामाजिक समायोजन के संबंधित कारकों को खोजना चाहिए।

4. सामाजिक समायोजन बढ़ाने के लिए अन्य पाठ्यसहगामी कियाओं को कराना चाहिए।

क्षेत्रीय पुस्तकालय Regional Library

संदर्भ गृंथ सूची–

1. डॉ. माथुर एस. एस. (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

2. डॉ. मंगल एस.के. (2011), शिक्षा मनोविज्ञान।

3. डॉ. श्रीवास्तव एस.एस. पाण्डेय, कल्पलता (शिक्षा मनोवज्ञान) टाटा मैग्रा हिल्स, कार्पोरेशन लिमिटेड।

4. डॉ. मिश्रा महेन्द्र कुमार (2009), शैक्षिक मनोविज्ञान, अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।

5. डॉ. मुरजानी जानकी एण्ड डॉ. जैन मीना (2007), अविष्कार पब्लिकेशन डिस्ट्रीब्यूटर, जयपुर।

6. श्री सिंह कुमार नरेंद्र (2005), शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

7. श्री मंगल एस.के. पाठक एण्ड पाठक पी.डी. (2010), अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

8. डॉ पंचौली एस.पी. एण्ड श्रीमति गर्ग सरिता (2008), शैक्षिक एवं मानसिक मापन, क्वालिटी पब्लिकेशन कम्पनी, भोपाल।

9. डॉ. पांडे के.पी. (2010), शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन क्वालिटी पब्लिकेशन भोपाल।

10. डॉ. महाजन संजीव (2004), सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी रोशन ऑफसेट, दिल्ली।

11. राबॅट एण्ड बैरन एण्ड ब्रायर्ल (2012), सामाजिक मनोविज्ञान।

परिशिष्ठः–

1. सामाजिक समायोजन मापनी (डॉ. आर.सी. देवा)

Confidetial

Consumable Form
of
S A I

DR. R. C. DEVA

T. M. No. 458715

निर्देश :—

शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन के लिए व्यक्तित्व पसन्द तथा आदतों की जानकारी आवश्यक है। ऐसा देखा गया है कि प्रतिभाशाली व्यक्तियों में भी ऐसी व्यक्तित्व सम्बन्धी कठिनाइयाँ होती हैं जो उनकी प्रतिभा के विकास में बाधक हैं। इनकी जानकारी प्राप्त होने पर उन्हें उपयुक्त सलाह दी जा सकती है जिससे वे और अधिक उन्नति कर सकें। इस प्रश्नावली में ऐसी जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ प्रश्न हैं। अतः इन प्रश्नों का सही और सोच-समझकर उत्तर देना आपके हित में है।

ये प्रश्न बहुत सरल हैं। प्रत्येक प्रश्न के सामने 'Yes' तथा 'No' के नीचे खाने (☐) बने हैं ; प्रश्न पढ़िये, यदि आपको अपना उत्तर 'Yes' में देना है तो 'Yes' के नीचे खाने पर क्रॉस (×) तथा यदि आपका उत्तर 'No' में है तो 'No' के नीचे खाने पर क्रॉस (×) लगावें।

उदाहरण :— क्रॉस	Yes	No
1. क्या आपको स्वादिष्ट भोजन पसन्द है ?	☒	☐
2. क्या आप गन्दे कपड़े पहनना पसन्द करते हैं ?	☐	☒

यह अनुमान लगाते हुए कि प्रथम प्रश्न के लिए आपका उत्तर 'Yes' है हमने उदाहरण प्रश्न संख्या 1 के सामने 'Yes' के नीचे वाले खाने (☐) पर क्रॉस (×) लगा दिया है। उसी प्रकार यह अनुमान लगाते हुए कि प्रश्न संख्या 2 के लिए आपका उत्तर 'No' है, हमने उदाहरण प्रश्न संख्या 2 के सामने 'No' के नीचे वाले खाने पर क्रॉस (×) लगाया।

आपके उत्तर पूर्ण रूप से गुप्त रखे जायेंगे। अतः आप उत्तर निःसंकोच भाव से दें। इस प्रश्नावली का कोई समय निश्चित नहीं है किन्तु उत्तर शीघ्रता से दीजिए।

अब आप पृष्ठ उलटिये व प्रश्नों के उत्तर देना प्रारम्भ कीजिए।

SCORING TABLE

T D S	E A S	S M S	S A S

D – 410

Estd. : 1971 Phone : 364926

National Psychological Corporation

4/230, Kacheri Ghat, AGRA - 282 004 (U. P.)

© 1982, 96. All rights reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act.
Social Adjustment Inventory, R. C. Deva.

	▽ Check Yes	No	
1. क्या आप कभी चोट लगने पर रोये हैं ?	☐	☐	1
2. क्या आपने कभी झूठ बोला है ?	☐	☐	2
3. क्या आपको कुत्ता, बिल्ली आदि जानवर पालना पसन्द है ?	☐	☐	3
4. क्या आपको छोटे बच्चे पसन्द हैं ?	☐	☐	4
5. क्या आपको शीघ्र गुस्सा आजाता है ?	☐	☐	5
6. क्या आप लड़ाई में शीघ्र मारपीट पर आजाते है ?	☐	☐	6
7. क्या आप यह अनुभव करते हैं कि आपको कोई प्यार नहीं करता ?	☐	☐	7
8. क्या आपने कभी अपने हिस्से से अधिक लिया है ?	☐	☐	8
9. क्या दूसरे व्यक्ति को चोट लगने पर आप कभी रोये हैं ?	☐	☐	9
10. क्या आप शिकार खेलना पसन्द करते हैं ?	☐	☐	10
11. क्या आप अकारण ही दुःखी से सुखी अथवा सुखी से दुःखी हो जाते हैं ?	☐	☐	11
12 क्या दूसरे व्यक्ति आपको प्रायः ही दुःखी करते हैं ?	☐	☐	12
13 क्या आप क्रोध में अक्सर आपे से बाहर होते हैं ?	☐	☐	13
14. क्या आप अक्सर अपने स्कूल / कार्य पर देरी से पहुँचते हैं ?	☐	☐	14
15. क्या आप सदैव प्रसन्न रहते हैं ?	☐	☐	15
16. क्या आप प्रायः स्वस्थ अनुभव करते हैं ?	☐	☐	16
17. क्या आप अक्सर घर से भाग जाने का विचार करते हैं ?	☐	☐	17
18. क्या आप अक्सर काम को टाल जाते हैं ?	☐	☐	18
19. क्या आप दस वर्षों के बाद पाँच लाख रुपये की अपेक्षा तुरन्त एक कार लेना पसन्द करेंगे ?	☐	☐	19
20. क्या आप कम वेतन परन्तु काफी तरक्की के व्यवसाय की अपेक्षा अधिक वेतन परन्तु कम तरक्की का व्यवसाय पसन्द करेंगे ?	☐	☐	20
21. क्या नुकसान होने पर भी आप सदैव मुस्कराते हैं ?	☐	☐	21
22. क्या आप सिनेमा देखकर कभी रोये हैं ?	☐	☐	22
23. क्या आप किसी को सुखी देखकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं ?	☐	☐	23
24. क्या आप अपरिचितों के बीच घबराहट का अनुभव करते हैं ?	☐	☐	24
25. क्या आप बहुत से व्यक्तियों से घृणा करते हैं ?	☐	☐	25
26. क्या आपने कभी कोई बात अनसुनी करने का बहाना किया है ?	☐	☐	26
27. क्या आपने कभी दूसरे की चीज को तोड़ी अथवा खोई है ?	☐	☐	27
28. क्या आप ऐसे व्यक्ति से विवाह करना पसन्द करेंगे जिससे आपको प्रेम नहीं है, परन्तु वह बहुत धनी है ?	☐	☐	28
29. क्या आप लोगों का तब तक मजाक उड़ाते हैं, जब तक वे रो न पड़ें ?	☐	☐	29
30. क्या आपके परिवार वालों ने आपके साथ सदैव ठीक व्यवहार किया है ?	☐	☐	30
31. क्या आपका कोई विश्वसनीय दोस्त है ?	☐	☐	31
32. क्या लोग आपको सनकी समझते हैं ?	☐	☐	32

△ Check

ck

		▽ Check Yes	No	
1	33. क्या आप जेब खर्च मिलने पर शीघ्र ही खर्च कर देते हैं ?	☐	☐	33
2	34. क्या आप मनोरंजन पसन्द करते हैं ?	☐	☐	34
3	35. क्या आपने जीवन का कोई उद्देश्य निश्चित किया है ?	☐	☐	35
4	36. क्या आप कार्य से शीघ्र उकता जाते हैं ?	☐	☐	36
5	37. क्या आप इरादा करने के बाद उसे अक्सर निभाने में सफल हो जाते हैं ?	☐	☐	37
6	38. क्या आपका मन इतना भटकता है कि आप अपना कार्य भूल जाते हैं ?	☐	☐	38
7	39. क्या आप पाँच सौ रुपए प्रति माह की अपेक्षा दस रुपए प्रतिदिन का वेतन पसन्द करेंगे ?	☐	☐	39
8	40. यदि परीक्षा में नकल करना अनुचित न माना जाय तो क्या आप नकल करके पास होना			
9	पसन्द करेंगे ?	☐	☐	40
10	41. क्या आपने कभी बदला लेने का विचार किया है ?	☐	☐	41
11	42. क्या आपने कभी विद्वान होने का दिखावा किया है ?	☐	☐	42
12	43. क्या आप शीघ्र ही मित्र बना लेते हैं ?	☐	☐	43
13	44. क्या आप वास्तविक मित्रता की अपेक्षा पाँच हजार रुपए अधिक पसन्द करेंगे ?	☐	☐	44
14	45. क्या आपको ऐसा लगता है कि अक्सर लोग आपका मजाक उड़ाते हैं ?	☐	☐	45
15	46. क्या बहुत से लोगों के बीच भी आप अकेलेपन का अनुभव करते हैं ?	☐	☐	46
16	47. क्या आप प्राय: जिस वस्तु को पसन्द करते हैं उसी से अक्समात घृणा करने लगते हैं ?	☐	☐	47
17	48. क्या आपने कभी चोरी की है, वह चाहे पिन अथवा बटन जैसी छोटी वस्तु हो ?	☐	☐	48
18	49. क्या आप मनोरंजन के लिए किसी जन्तु को परेशान करना पसन्द करते हैं ?	☐	☐	49
19	50. क्या आप किसी व्यक्ति को फाँसी लगते हुए देखना पसन्द करेंगे ?	☐	☐	50
	51. क्या आप अक्सर लोगों पर सन्देह करते हैं ?	☐	☐	51
20	52. क्या आप अक्सर ऐसा अनुभव करते हैं कि लोग आपके दुश्मन हैं ?	☐	☐	52
21	53. क्या आपको ऐसा लगता है कि कोई रहस्यपूर्ण शक्ति आपसे आपकी इच्छा विरुद्ध काम			
22	करवा रही है ?	☐	☐	53
23	54. क्या आपमें ऐसी अनेक आदतें हैं जिन्हें आप तोड़ना चाहते हैं ?	☐	☐	54
24	55. क्या आप बहुधा असन्तुष्ट और बेचैन रहते हैं ?	☐	☐	55
25	56. क्या आप कार्य की पहले योजना बना लेते हैं ?	☐	☐	56
26	57. क्या आप प्राय: सुस्ती से कार्य करते हैं ?	☐	☐	57
27	58. क्या आप एक कार्य पर अधिक देर तक नहीं लग पाते हैं ?	☐	☐	58
	59. क्या आप कठिन परिश्रम वाले किन्तु रुचिपूर्ण व्यवसाय की अपेक्षा कम परिश्रम वाले किन्तु			
28	अरुचिपूर्ण व्यवसाय को पसन्द करेंगे ?	☐	☐	59
29	60. क्या आप किसी कार्य को करने की योजना पाँच या दस वर्ष पूर्व ही बना लेते हैं ?	☐	☐	60
30	61 क्या मिठाई देखकर कभी आपके मुँह में पानी आया है ?	☐	☐	61
31	62. क्या आप कहानी पढ़कर / सुनकर कभी रोये हैं ?	☐	☐	62
32	63 क्या आप दूसरों को दु:खी देखकर स्वयं भी दु:खी हो जाते हैं ?	☐	☐	63
	64. क्या आप दूसरों को दु:खी देखकर यह अनुभव करते हैं कि आप कितने सुखी हैं ?	☐	☐	64
eck	65. क्या आप अपने दोस्तों से शीघ्र उकता जाते हैं ?	☐	☐	65
	66. क्या आप ऐसा अनुभव करते हैं कि और लोगों से आप बहुत भिन्न हैं ?	☐	☐	66
		△ Check		

	▽ Check Yes	No	
67. क्या आप अपना कार्य सदैव समय पर कर लेते हैं ?	☐	☐	67
68. क्या आपने किसी की पीठ पीछे बुराई की है ?	☐	☐	68
69. क्या आप कभी-कभी किसी व्यक्ति या जन्तु को चोट लगने पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं ?	☐	☐	69
70. क्या आप लोगों से मिलने पर उनसे प्रायः रुचि लेने लगते हैं ?	☐	☐	70
71. क्या बहुत से लोग आपसे मित्रता करना पसन्द करते हैं ?	☐	☐	71
72. क्या अक्सर लोग आपको पसन्द नहीं करते हैं ?	☐	☐	72
73. क्या आप अपने कार्य को टालते रहते हैं और अन्त में अत्यधिक मेहनत करके उसे पूरा करते हैं ?	☐	☐	73
74. क्या आपको अक्सर ऐसा लगता है कि जीवन जीने योग्य नहीं है ?	☐	☐	74
75. क्या आप अपना उद्देश्य पूर्ण न होने पर भी सन्तुष्ट रहते हैं ?	☐	☐	75
76. क्या आप महत्वपूर्ण किन्तु सामान्य वेतन के व्यवसाय पसन्द करेंगे ?	☐	☐	76
77. क्या आप कार्य करने का इरादा करने के बाद प्रायः ऐसा अनुभव करते हैं कि वह आपके वश का नहीं है ?	☐	☐	77
78. क्या आप अक्सर इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि शान्त रहना मुश्किल हो जाता है ?	☐	☐	78
79. कोई कार्य करने का निश्चय करने के बाद क्या आप प्रायः विचार बदल देते हैं ?	☐	☐	79
80. क्या आप इस समय एक सुन्दर कार की अपेक्षा एक वर्ष बाद दस लाख रुपये लेना पसन्द करेंगे ?	☐	☐	80
81. क्या आपने सदैव प्रसन्नता से आज्ञा पालन किया है ?	☐	☐	81
82. क्या आपने कभी किसी व्यक्ति की शिकायत की है ?	☐	☐	82
83 क्या आप अपने शत्रु को गहरी चोट लगने पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं ?	☐	☐	83
84. क्या आप जानवरों का भयानक युद्ध देखना पसन्द करेंगे ?	☐	☐	84
85. क्या आपके माता-पिता / अभिभावक आपसे जरूरत से ज्यादा आशा करते हैं ?	☐	☐	85
86. क्या लोगों का व्यवहार आपके प्रति न्यायपूर्ण है ?	☐	☐	86
87. क्या आप सड़क से टूटा शीशा इत्यादि हटा देते हैं ताकि दूसरों को चोट न लगे ?	☐	☐	87
88. क्या आप प्रायः लोगों की सहायता कर देते हैं ?	☐	☐	88
89. क्या आपको मित्रता करने में काफी समय लगता है ?	☐	☐	89
90. क्या आप किसी को उचित दण्ड मिलने पर भी दुःखी होते हैं ?	☐	☐	90
91. क्या आपको ऐसा लगता है कि संसार में आपका कोई नहीं है ?	☐	☐	91
92. क्या लोग आवश्यकता से अधिक आप में गलती निकालते हैं ?	☐	☐	92
93. क्या आप अक्सर व्यर्थ के विचारों से छुटकारा पाने के लिए बेचैन हो जाते हैं ?	☐	☐	93
94. क्या आप अक्सर बिना सोचे-समझे कार्य में जुट जाते हैं ?	☐	☐	94
95. क्या आप अक्सर दुःखी रहते हैं ?	☐	☐	95
96. क्या आप बहुत से कार्य अपूर्ण छोड़ देते हैं ?	☐	☐	96
97. क्या आप अपने कार्य की अपेक्षा दूसरों के कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं ?	☐	☐	97
98. क्या आप अक्सर अपनी योजनाएँ पूरी कर लेते हैं ?	☐	☐	98
99. क्या आप तुरन्त पाँच वर्ष के कारावास की अपेक्षा दस वर्ष बाद दस वर्ष का कारावास पसन्द करेंगे ?	☐	☐	99
100. क्या आप प्रायः बिना योजना बनाए कार्य प्रारम्भ कर देते हैं ?	☐	☐	100
		△ Check	

Chaurasia Electric Press, Agra-4